Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ۔

(सूरत आले-इम्रान आयत :130)

अनुवाद: और अल्लाह ही का है जो आकाशों और ज़मीन में है वह जिसे चाहता है क्षमा कर देता है और जिसे चाहता है आज़ाब देता है और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और बार बार रहम करने वाला है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 4

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 50

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

12 रबीउल सानी 1441 हिजरी कमरी 12 फतह 1398 हिजरी शमसी 12 दिसम्बर 2019 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बढ़कर दुनिया में किसी कामिल इन्सान का नमूना मौजूद नहीं और ना भविष्य में क़यामत तक हो सकता है

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

सोफियों की दो विचार धारा वजूदी तथा शुहूदी

इस आयत पर दृष्टि करने से यह भी पता चलता है कि वजूदी मज़हब हक़ से दूर चला गया है और उसने अल्लाह तआला के सिफतों (विशेषताओं) के समझने में ठोकर खाई है। वह मालूम नहीं कर सकता कि उसने उबूदीयत और उलूहियत के ही रिश्ता पर ठोकर खाई है। असल यह मालूम होता है कि उनमें से जो लोग अहले कशफ़ हुए हैं और उनमें से अहल मुजाहिदा ने पता करना चाहा तो उबूदीयत और रबूबियत के रिश्ता में अन्तर ना कर सके और ख़लक़ुल अशिया के मानने वाले हो गए।

क़ुरआन शरीफ़ हृदय ही पर वारिद हो कर ज़बान पर आता है और हृदय का किस क़दर सम्बन्ध था कि कलाम इलाही का मौरिद हो गया। इस बारीक बेहस से वे धोखा खा सकते थे मगर बात यह है कि इन्सान जब ग़लतफ़हमी से क़दम उठाता है तो फिर मुश्किलों के भंवर में फिसल जाता है जैसा मैंने अभी वर्णन किया है। ख़ुदा तआला के तसर्रुफ़ात इन्सान के साथ ऐसे गुढ़ से गूढ़तर हैं कि कोई ताक़त उनको वर्णन नहीं कर सकता और अगर ऐसा होता तो इस की रबूबियत और सम्पूर्ण सिफ़तें क़ुरआन में वर्णन न पाई जातीं। हमारी नेस्ती ही उस की हस्ती का सबूत है और यह एक सच्ची बात है कि जब इन्सान हर तरह से असहाय होता है तो इस की नेस्ती ही होती है। इस बारीक भेद को कुछ लोग ना समझ कर ख़लुक़ुल अशया होव अयुनौ कह उठे। वजूदी और शुहूदी में से पहले वर्णन किए गए तो वही हैं जो ख़लुक़ु अशया होव अयुनौ कहते और मानते हैं और दूसरे वह हैं जो फ़ना नज़री के मानने वाले हैं और कहते हैं कि मुहब्बत में इन्सान इतना इस्तिग़राक़ (लीनता) कर सकता है कि वह फ़नाफ़िल्लाह (अल्लाह में लीन) हो सकता है और फिर उस के लिए यह कहना उचित होता है

मन तन शुदम तू जां शुदी मन तू शदम तू मन शुदी
ताकिस नगवेद बाद अज़ीं मन दीगरम् तू दीगरी

इस के इलावा अल्लाह तआला के तसर्रुफ़ों का मानने वाला उनको भी होना पड़ता है चाहे वजूदी हों या शुहूदी हों। उनके कुछ बुज़ुर्ग और अहले कमाल बायज़ीद बुस्तामी अलैहिस्सालम से लेकर शिबली अलैहिस्सालम, ज़ुन्नून अलैहिस्सालम और मुहयुद्दीन इबन अरबी अलैहिस्सालम तक के वाक्य प्राय ऐसे हैं कि कुछ ज़ाहिर तौर पर और कुछ छुपे हुए इसी तरफ़ गए हैं। मैं यह बात खोल कर कहनी चाहता हूँ कि हमारा यह हक़ नहीं कि हम उनको तिरस्कार की नज़र से देखें। नहीं नहीं। वह अक़्ल वाले थे। बात यूं है कि मार्फ़त का यह एक सूक्ष्म और गूढ़ राज़ था। इस का रिश्ता हाथ से निकल गया था। यही बात थी और कुछ नहीं। ख़ुदा तआला के उच्च तसर्रुफ़ात पर इन्सान ऐसा मालूम होता है जैसा कि ज़ात को हलाक करने वाला। उन्होंने इन्सान को ऐसा देखा और उनके मुँह से ऐसी बातें निकलें और ज़हन इधर हो गया। अत: यह बात दिल की गहराई से याद रखो कि इन्सान भीतर की पवित्रता से ऐसे दर्जा पर पहुंचता है (जैसा कि हमारे नबी करीम अलैहिस्सलातो वत्तसलीम इस उच्च स्तर पर पहुंचे) कि जहां उसे इक़तिदारी ताक़त मिलती है लेकिन ख़ालिक़ (सृष्टा) और मख़लूक़ (सृष्टि) में एक अन्तर है और स्पष्ट फ़र्क़ है इस को कभी दिल से दूर करना ना चाहिए।

इन्सान हस्ती के बन्धनों से आज़ाद नहीं। ना यहां ना वहां। खाता पीता है। पाप होते हैं बड़े भी और छोटे भी। और इसी तरह पर अगले जहान में भी कुछ जहन्नुम में होंगे और कुछ हमेशा की जन्नत में। अत: यह है कि इन्सान कभी भी बन्दगी के लिबास से बाहर नहीं हो सकता तो फिर में नहीं समझ सकता कि वह कौन सा पर्दा है कि जब वह उतार कर रबूबियत का लिबास पहन लेता है। बड़े बड़े ज़ाहिदों और मुजाहिदों के शामिल हाल उबूदीयत ही रही।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उबूदीयत

क़ुरआन करीम को पढ़ कर देख लो और तो और हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बढ़कर दुनिया में किसी कामिल इन्सान का नमूना मौजूद नहीं और ना भविष्य में क़यामत तक हो सकता है फिर देखो कि इक़तिदारी चमत्कार के मिलने पर भी हुज़ूर के साथ हमेशा उबूदीयत (बन्दा होना) ही रही और बार-बार اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثۡلُکُمۡ (अलकहफ़ :111) ही फ़रमाते रहे। यहां तक कि कलमा तौहीद में अपनी उबूदीयत की स्वीकारोक्ति का एक अंश अनिवार्य क़रार दिया। जिसके बिना मुसलमान मुसलमान ही नहीं हो सकता। सोचो ! और फिर सोचो !! अत: जिस हाल में हादी अकमल की ज़िन्दगी की शैली हम को यह शिक्षा दे रही है कि क़ुर्ब के उच्चतम स्थान पर भी पहुंच कर उबूदीयत की स्वीकारोक्ति को हाथ से नहीं दिया तो और किसी का तो ऐसा ख़्याल करना और ऐसी बातों का दिल में लाना ही फ़ुज़ूल और व्यर्थ है। (मल्फ़ूज़ात जिल्द 1 पृष्ठ 99 से 101)

☆ ☆ ☆

जलसा सालाना कादियान के बारे में एलान

दिसम्बर 2019 ई में आयोजित होने वाले जलसा सालाना कादियान के बारे में अख़बार बदर कादियान में ऐलान होता रहा है कि यह जलसा 125वां जलसा सालाना है। इस तारीख़ी जलसा के बारे में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने कुछ विशेष प्रोग्रामों की मन्ज़ूरी प्रदान फ़रमाई है जिस की सूचना सर्कुलर के द्वारा जमाअतों को दी गई है। इसी दौरान' तारीख़ अहमदियत कादियान विभाग''की तहक़ीक़ की रोशनी में सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल की सेवा में यह सूचना दी गई कि 2019 ई में आयोजित होने वाला जलसा सालाना 125 वां जलसा सालाना नहीं बल्कि126 वां जलसा सालाना है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने शफ़क़त करते हुए इस की मन्ज़ूरी प्रदान फ़रमाई और प्रोग्रामों को भी जारी रखने का आदेश फ़रमाया है। बदर के पाठक सूचित रहें।

(नाज़िर इस्लाहो इरशाद मर्कज़िया कादियान)

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ का अमरीका का सफर, अक्तूबर 2018 ई (अन्तिम भाग-19)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के नेशनल मज्लिस आमला अमरीका के साथ मीटिंग, आमीन के प्रोग्राम की तक़रीब, हुज़ूर अनवर की अमरीका से रवानगी,लन्दन वुरूद मसऊद

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

04 नवम्बर 2018 ई (दिनांक इतवार) (बाक़ी रिपोर्ट)

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ के पूछने पर नेशनल सेक्रेटरी रिश्ता नाता ने निवेदन किया कि हमारे डेटाबेस में लगभग 450 लोगों का डेटा है और पिछले साल 12 रिश्ते तय हुए हैं। 80 लड़के जबकि 230 से अधिक लड़कियां हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ के पूछने पर नेशनल सेक्रेटरी रिश्ता नाता ने निवेदन किया कि लड़कों की उमरें अधिकतर 25 से 35 साल हैं और उनकी शिक्षा के स्तर भी विभिन्न हैं। दूसरी तरफ़ लड़कियां काफ़ी पढ़ी लिखी हैं। इस वजह से भी समस्यायों का सामना है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ के पूछने पर नेशनल सेक्रेटरी रिश्ता नाता ने निवेदन किया कि उनका इंटरनेशनल रिश्ता नाता कमेटी के साथ सम्पर्क है और उन्होंने कुछ परामर्श भी भेजे हैं। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: इस बारे में मर्कज़ से नियमित सम्पर्क रखें।

*हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ के पूछने पर नेशनल सेक्रेटरी रिश्ता नाता ने निवेदन किया कि अभी तक दस रिश्ते तय हो चुके हैं। उनमें वे शामिल हैं जिनके निकाह हो चुके हैं।

*इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने नेशनल सेक्रेटरी उमूरे ख़ारिजा से पूछने फ़रमाया कि आपका इस साल का क्या प्लान है? आपके विभाग के सपुर्द कौन से काम हैं ? क्या आपको इन कामों का पता है? इस पर नेशनल सेक्रेटरी उमूरे ख़ारिजा ने निवेदन किया कि तहरीक जदीद के नियमों के अनुसार गर्वनमैंट अथार्टीज़, मज़हबी आर्गेनाईज़ेशनज़ और अन्य संस्थायों के साथ सम्पर्क स्थापित करना। इलैक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया में जमाअती नुक़्ता नज़र को उजागर करना उनके काम हैं।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: इलैक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया का काम तो आप नहीं कर रहे। सेक्रेटरी उमूर ख़ारिजा ने निवेदन किया कि हुज़ूर यह काम मीडिया टीम के सपुर्द है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: आज से यह काम मैं आपके सपुर्द कर रहा हूँ। एक कमेटी बनाएँ या टीम बनाएँ जो कि मीडिया, प्रैस और इस से सम्बन्धित सारे मामलों को सँभाले। आइन्दा से जमाअती नुक़्ता नज़र को मीडिया में उजागर करने का काम आपके सपुर्द है। अगर कहीं जमाअत की पालिसी का कोई मसला होता है तो मीडिया या प्रैस में भिजवाने से पहले मुझसे हिदायत लिया करें। जमाअती statements और प्रैस रीलीज़ या इंटरव्यूज़ देने के लिए आप जमाअत के प्रतिनिधि होंगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने डाक्टर नसीम रहमतुल्लाह साहिब इंचार्ज मीडिया टीम से मुख़ातब होते हुए फ़रमाया: अगर आपका मीडिया टीम के बारे में से कोई प्लान है या जो भी हिदायते हैं वे सेक्रेटरी उमूरे ख़ारिजा को दे दें। आज से उमूरे ख़ारिजा विभाग यह मामले देखेगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: उमूरे ख़ारिजा विभाग ही दूसरी जमाअतों और कम्यूनिटीज़ से दोस्ताना सम्बन्ध रखने की कोशिश करेगा। मैं आपको एक नई assignment यह दे रहा हूँ कि आपने नॉर्थ अमरीकन मुस्लिम कौंसल के साथ दोस्ताना सम्बन्ध बनाने हैं। उन्होंने जो जमाअत पर आरोप इत्यादि लगाए हैं उन के जवाब भी आपने देने हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया आप एक टीम बनाएँ। आपकी कुछ statements जो वर्तमान समय की समस्यायों के बारे में होती हैं और कुछ बयानों का सम्बन्ध इंटरनेशनल हालात और विशेष रूप से पाकिस्तान में अहमदियों के बारे में होता है। उनमें आपको एहतियात से काम लेना होगा। जहां भी पाकिस्तानी अहमदियों का मामला हो वहां आपने मेरी इजाज़त के बग़ैर अपने आप ख़ुद कोई बयान नहीं देना।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: आप सीधा अमीर साहिब की हिदायते के अन्तर्गत काम करेंगे। आप बिलकुल आज़ाद नहीं हैं। इस के अतिरिक्त मेरे प्रैस ऐंड मीडिया सैक्शन से भी सम्पर्क रखें। अगर कोई एमरजैंसी अवस्था है तो आप फ़ोन या ईमेल द्वारा आबिद वहीद साहिब के साथ सम्पर्क कर सकते हैं। यह दफ़्तर 24 घंटे खुला होता है। सिर्फ आबिद साहिब ही नहीं ,बल्कि और भी स्टाफ़ मैंबर वहां काम करते हैं। वहां काम करने वालों के सम्पर्क नम्बर प्राप्त कर लें ।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: दूसरी बात यह है कि ज़रूरी नहीं कि अख़बारों में आने वाले हर ईशू पर ही बयान जारी किया जाए। कई बार कुछ मामलों का सम्बन्ध जमाअत के साथ नहीं होता, ऐसे इशूज़ में दख़ल अंदाज़ी करने की ज़रूरत नहीं है। ऐसी चीज़ों का हिस्सा ना बनें। दूसरे मुस्लमानों को ख़ुद जवाब देने दें। हाँ अगर प्रैस ख़ुद आपके पास आता है तो फिर आप उनके सवालों के जवाब दे सकते हैं लेकिन पालिसी के मामलात के बारे में से एहतियात करनी होगी। अगर कोई policy matter हो जिसका जवाब देना निहायत ज़रूरी हो वहां आपका बयान diplomatic होना चाहिए और फिर बाद में मुझ से ऐसे मामलों के बारे में हिदायत ले लें। हिदायत लेने के बाद आप फिर विश्वसनीय बयान जारी कर सकते हैं।

*इसके बाद नेशनल सेक्रेटरी उमूरे आम्मा ने रिपोर्ट पेश करते हुए बताया कि हमारे अधिकतर मामले शादी ब्याह के झगड़ों के बारे में होते हैं। पिछले अढ़ाई साल में हमारे पास 42 खुला और 18 तलाक़ के केसिज़ आए हैं। उनमें से 44 केसिज़ को हल करने में कामयाब हुए हैं। 15 केसिज़ की सूरत में हमने सुलह करवाई है।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: सुलह तो हो जाती है लेकिन साल बाद प्राय औरतें फिर अपने खाविंदों की शिकायतें लेकर आ जाती हैं कि उनका रवैय्या ठीक नहीं है। इसलिए इन मामलों को हल करने के बाद ऐसे लोगों के साथ सम्पर्क भी रखना चाहिए। कम से कम सेक्रेटरी तरबियत का ऐसे लोगों के साथ ज़रूर सम्पर्क होना चाहिए।

*हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ के पूछने पर सेक्रेटरी तरबियत ने निवेदन किया कि नेशनल लेवल पर भी इस्लाही कमेटी स्थापित है और इसी तरह स्थानीय सतह पर 35 इस्लाही कमेटियां स्थापित हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने सेक्रेटरी तरबियत को हिदायत देते हुए फ़रमाया कि सदर लजना भी इस्लाही कमेटी की मैंबर होती है इसलिए आपकी पहुंच तो हर घर तक होनी चाहिए। जहां कहीं भी मसला का आरम्भ हो उसी वक़्त आपको रिपोर्ट मिलनी चाहिए। इस के लिए आप प्लान बनाएँ कि लजना की तरफ़ से आप को मालूमात मिल जाएं। बजाय उस के कि मामला इस हद तक चला जाए जहां उसका हल ही मुम्किन ना हो, उसे शुरू से ही देख लिया जायह। या बजाय उस के कि मामला क़ज़ा या उमूरे आम्मा में जायह, इस्लाही कमेटी को पहले ही मामला को सुलझाने की कोशिश करनी चाहिए।

*हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने सेक्रेटरी उमूरे आम्मा से पूछा कि इन मामलों के अतिरिक्त जो रिफ्यूजीज़ आए हैं, उन्हें मुलाज़मतें इत्यादि दिलवाने में मदद करना भी आप का काम है। इस बारे में क्या कर रहे हैं? इस पर सेक्रेटरी उमूरे आम्मा ने निवेदन किया कि हमने अमरीका में चार विभिन्न जगहों पर सैंटरज़ बनाए हुए हैं। पिछले एक या डेढ़ साल में हमने 28 फ़ैमिलियों की मदद की है। इस बारे में से हम ख़ुद्दामुल अहमिदया और सनअत तथा तिजारत

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्बः जुमअः

अल्लाह तआला की राह में नेक नीयती से ख़र्च किया हुआ और पवित्र माल में से जो ख़र्च किया जाता है वह हज़ारों गुना बढ़कर भी मिल सकता है और मिलता है।

अल्लाह तआला ने वास्तविक मोमिन की परिभाषा ही यह की है कि वे अल्लाह तआला की तवज्जा चाहने के लिए उस की राह में ख़र्च करते हैं।

अल्लाह तआला कभी किसी पर ज़ुल्म नहीं करता। यह इन्सान ही है जो विभिन्न हरकतें कर के, ग़लत हरकतें कर के, अल्लाह तआला के हुक्मों की ना-फ़रमानी कर के अपने ऊपर अत्याचार करता है और नुक़्सान उठाता है।

अत: अजीब किस्म के लोग हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस-सलाम को अल्लाह तआला ने प्रदान फ़रमाए हैं जिनके बारे में आपने अपनी ज़िन्दगी में भी फ़रमाया कि नमूने देखकर मुझे हैरत होती है कि किस तरह ये लोग करते हैं

दुनिया के इस हिस्से में जो माद्दियत में डूबा हुआ है और ख़ुदा से दूरी पैदा हो रही है यहां अल्लाह तआला अहमदियों को अपने फ़ज़्लों से नवाज़ कर जहां अपनी हस्ती का पता देता है वहां अहमदियत की हक़ीक़त और सच्चाई भी उन पर ज़ाहिर हो रही है

अल्लाह तआला इन सब क़ुर्बानी करने वालों के मालों तथा जानों में बे-इंतिहा बरकत प्रदान फ़रमाए।

तहरीक जदीद के 85 वें साल के कामयाब और बरकतों वाले समाप्न और 86 वें साल के आरम्भ की घोषणा

दुनिया भर में बसने वाली, विभिन्न क़ौमीयतों से सम्बन्ध रखने वाले अहमदी मर्द तथा औरतें और बच्चों तथा नई बैअत करने वालों की बेमिसाल क़ुर्बानियों और उनके नतीजे में उन पर होने वाले इलाही फ़ज़्लों का वर्णन।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 1 नवम्बर 2019 ई. स्थान - मस्जिद 'बैयतुल फुतूह मोर्डन सिर्रे (यू. के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

لَيْسَ عَلَيْكَ هُدَاهُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ فَلِاَنْفُسِكُمْ وَمَا تُنْفِقُوْنَ اِلَّا ابْتِغَآءَ وَجْهِ اللّٰهِ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ يُّوَفَّ اِلَيْكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ۔

(अल-हज 42)

इस का अनुवाद यह है कि उन्हें राह पर लाना तेरे ज़िम्मा नहीं है। हाँ अल्लाह जिसे चाहता है राह पर ले आता है और जो अच्छा माल भी तुम ख़ुदा की राह में ख़र्च करो और हक़ीक़त यह है कि तुम ऐसा ख़र्च सिर्फ़ अल्लाह का ध्यान चाहने के लिए किया करते हो सो उस का लाभ भी तुम्हारी अपनी जानों ही को होगा और जो अच्छा माल भी तुम ख़र्च करो वो तुम्हें पूरा पूरा वापस कर दिया जाएगा और तुम पर अत्याचार नहीं किया जाएगा।

यह आयत जैसा कि इस से स्पष्ट है अल्लाह तआला ने (इस में यह स्पष्ट फ़र्मा दिया कि हिदायत देना, सही रास्ते की तरफ़ लेकर जाना या उस को इस रास्ते पर डाल देना जो सही दिशा में जाता है, जो असल मंज़िल की तरफ़ जाता है और फिर उस रास्ते पर, इस हिदायत और रहनुमाई पर स्थापित रखना और मंज़िल तक पहुंचाना और रास्ता भटकने से बचाना और अंजाम ख़ैर वाला करना अल्लाह तआला के फ़ज़्लों पर ही आधारित है और अल्लाह तआला का ही काम है। हम किसी को नेकियों का रास्ता दिखा तो सकते हैं लेकिन यह ज़रूरी नहीं कि ज़रूर इस रास्ते पर डाल भी दें और फिर इस पर क़ायम भी रखें। अत: यह काम अल्लाह तआला ने अपने ज़िम्मे लिया है और जो इन्सान अल्लाह तआला की तरफ़ बढ़ने की कोशिश करता है, इस रास्ते पर चलने की कोशिश भी करता है और दुआ भी करता है तो फिर अल्लाह तआला के फ़ज़्लों से मंज़िल तक भी पहुंचता है। अत: उस के लिए ज़रूरी है कि हम हिदायत के बाद इस हिदायत के रास्ते पर अल्लाह तआला के बताए हुए मार्ग के अनुसार चलने की कोशिश भी करते रहें और इस से दुआ भी करते रहें और इस से दुआ करते हुए, इस पर स्थापित रहते हुए उस के फ़ज़्ल को भी मांगते रहें ताकि अंजाम बख़ैर हो और कभी हमारी कमज़ोरी हमें अल्लाह तआला की तरफ़ ले जाने वाले रास्ते से भटका ना दे।

फिर दूसरी बात जो अल्लाह तआला ने इस आयत में फ़रमाई वह यह है कि तुम अच्छे माल में से जो भी ख़र्च करो वह तुम्हारे अपने लाभ के लिए है। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ فَلِاَنْفُسِكُمْ जो भी अच्छा माल तुम अल्लाह तआला की राह में ख़र्च करो उस का लाभ तुम्हें ही होगा। अल्लाह तआला उधार नहीं रखता बल्कि बढ़ा कर लौटाता है इस तरह जिस तरह एक किसान खेत में बीज डालता है तो कोई जाहिल, कम अक़्ल वाला कह सकता है कि यह उसने क्या-किया कि सारा बीज ज़मीन में फेंक के नष्ट कर दिया लेकिन अक़्लमंद जानता है कि ये दाने जो ज़मीन में फेंके गए हैं हज़ारों बल्कि लाखों करोड़ों दाने भी बन कर निकल सकते हैं सिवाए उस के कि वह फ़सल आफ़त का शिकार हो जाए और उसे कुछ ना मिले। अत: अल्लाह तआला की राह में नेक नीयती से ख़र्च किया हुआ और पवित्र माल में से जो ख़र्च किया जाता है वे हज़ारों गुना बढ़कर भी मिल सकता है और मिलता है। अहमदी अपने अनुभव लिखते रहते हैं, इस बात का इज़हार करते हैं कि किस तरह हमने अल्लाह तआला की राह में क़ुर्बानी की और किस तरह अल्लाह तआला ने हमें बढ़ा कर प्रदान किया। कुछ कमज़ोर ईमान वाले भी होते हैं, नए आने वाले भी होते हैं वे भी कहते हैं और तजुर्बा करते हैं कि देखें कहाँ तक यह बात ठीक है कि अल्लाह तआला बढ़ा कर देता है और फिर अल्लाह तआला उनके ईमान को मज़बूत करने के लिए उनको नवाज़ता भी है लेकिन अधिकतर ऐसी है जो अल्लाह तआला की इस बात को समझते हैं कि وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ فَلِاَنْفُسِكُمْ और जो कुछ भी ख़र्च करते हुए अल्लाह तआला की तवज्जा चाहने के लिए ख़र्च करते हो। वे धर्म की ज़रूरतों के लिए ख़र्च करते हैं तो अल्लाह तआला की तवज्जा चाहने के लिए ख़र्च करते हैं। अल्लाह तआला ने वास्तविक मोमिन की परिभाषा ही यह की है कि वे अल्लाह तआला का ध्यान चाहने के लिए उस की राह में ख़र्च करते हैं और निसन्देह अल्लाह तआला ऐसे लोगों की हालतों को जानता है जो अल्लाह तआला की प्रसन्नता को प्राप्त करने के लिए ख़र्च करते हैं और फिर ऐसे लोग जो अल्लाह तआला की रज़ा के लिए ख़र्च करते हैं अल्लाह तआला के फ़ज़्लों को भी देख लेते हैं कि किस तरह अल्लाह तआला उनकी क़ुर्बानी को क़बूल करते हुए उन्हें वापस लौटाता है और फिर यह बात उन्हें और अधिक ईमान में बढ़ाती है। अत: अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मैं उधार नहीं रखता। तुम मेरी तवज्जा चाहने के लिए अपने पवित्र माल में से मेरे धर्म के लिए और मेरे कहने पर ख़र्च करते हो तो मैं भी तुम्हें लौटाऊंगा। शर्त यह है कि माल पवित्र हो। अत: इन देशों में, तरक़्क़ी वाले देशों में रहने वाले कुछ खासतौर पर इस बात का ख़्याल रखें कि पवित्र माल कमाएं। ज़्यादा कमाने के लिए हुकूमत की संस्थाओं को धोखा ना दें कि अपनी कमाई भी कर रहे हूँ और हुकूमत से ग़लत वर्णन कर के वज़ीफ़ा भी ले रहे हूँ। ऐसे लोग हुकूमत से नाजायज़ रक़म भी लेते हैं। अपने टैक्स जो हुकूमत का हक़ और शहरी का फ़र्ज़ है वह भी अदा नहीं करते। दूसरे लोगों का हक़ भी मारते हैं और वही रक़म जो दूसरे माध्यम से देश की तरक़्क़ी में ख़र्च हो सकती है इस में भी रोक बनते हैं और सबसे

बढ़कर ये कि ग़लत बात कर के झूठ बालने वाले भी हो रहे होते हैं और ये सारी चीज़ें ग़लत हैं, गुनाह हैं और पवित्र माल से दूर ले जाने वाली हैं।

फिर पवित्र माल में दूसरे माध्यमों से ग़लत तौर पर कमाया हुआ माल भी नहीं है। जिन कामों की अल्लाह तआला ने मनाही की है, इन कामों के करने से कमाया हुआ माल भी पवित्र माल नहीं होता। तो बहरहाल अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मैं पवित्र माल की क़ुर्बानी को जो मेरी तवज्जा हासिल करने के लिए की जाए ना सिर्फ स्वीकार करता हूँ बल्कि يُوَفَّ إِلَيْكُمْ तुम्हें पूरा पूरा लौटाता हूँ। विभिन्न माध्यमों से लौटाता हूँ। अल्लाह तआला कभी किसी पर अत्याचार नहीं करता। यह इन्सान ही है जो मुख़्तलिफ़ हरकतें कर के, ग़लत हरकतें कर के अल्लाह तआला के हुक्मों की ना-फ़रमानी कर के अपने ऊपर अत्याचार करता है और नुक़्सान उठाता है। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से, अल्लाह तआला के फ़ज़लों को हासिल करने वाले और अल्लाह तआला की इस बात का तजुर्बा और समझ रखने वाले हज़ारों और लाखों अहमदी हैं। उनमें से कुछ एक के कुछ उदाहरण मैं आज प्रस्तुत करूँगा। ये क़ुर्बानी-यों के दृश्य हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के वक़्त से देख रहे हैं, घटनाएं पढ़ते हैं और आज भी हमें नज़र आते हैं। यह कोई पुरानी बातें नहीं हैं कि बावजूद कठिन हालात के अहमदी कैसी कैसी क़ुर्बानियां अल्लाह तआला की तवज्जा चाहने के लिए, उस की रज़ा चाहने के लिए करते हैं। आज ख़ुत्बे में तहरीक जदीद के नए साल का ऐलान भी होना है इसलिए इस हवाले से मैं कुछ घटनाएं प्रस्तुत करूँगा।

सेरालियून से लू नसूर (Lunsar) क्षेत्र के एक मुबल्लिग़ लिखते हैं कि एक नई बैअत करने वाले कुमारा साहिब हैं उनको तहरीक जदीद का परिचय और चंदों की बरकतों के बारे में जब बताया गया तो इस नई बैअत करने वाले ने चंदा आम की अदायगी के साथ साथ तहरीक जदीद का चंदा भी अदा कर दिया। उनके पास थोड़ी सी रक़म बची जिस से वह (ग़रीब आदमी थे महीने के लिए चावल ख़रीद सकते थे लेकिन उन्होंने यह रक़म भी तहरीक जदीद के चंदे में दे दी। कहते हैं कि चंद देने के बाद ही वह साहिब फिर आए और बताया कि जिस दिन मैंने तहरीक जदीद का चंदा अदा किया था इस से अगले दिन कंपनी ने कहा कि हम ने तुम्हारा डिपार्टमैंट तबदील कर दिया है और नए डिपार्टमैंट में तनख़्वाह भी दोगुनी हो गई है और दूसरे benifits भी बहुत ज़्यादा हैं। चंदे की वजह से बरकतें होती हैं। अल्लाह तआला फ़ज़ल फ़रमाता है तो कहते हैं कि जिन बरकतों का मैंने ज़िक्र सुना था अल्लाह तआला ने मुझे उन बरकतों की झलक दिखा दी और फिर कहते हैं कि आइन्दा में हर महीने चंदा आम के साथ तहरीक जदीद का चंदा भी दिया करूँगा।

फिर सेरालियून के क्षेत्र पोर्ट लोको (Port Loko) के मुबल्लिग़ कहते हैं। एक घटना वर्णन करते हैं। ये देखें कि ग़रीबी के बावजूद जो क़ुर्बानियां करने वाले हैं अल्लाह तआला उन्हें किस तरह नवाज़ता है और फिर यह बात उनके ईमान में वृद्धि का कारण भी बनती है। कहते हैं घटना यूं है कि एक गांव सांडा मबलन तौरो (Sanda Mablonotor) है। इस में मुहम्मद साहिब एक अहमदी हैं। उन्होंने तहरीक जदीद के वादा में जो रक़म लिखवाई हुई थी उसे अदा नहीं कर सके। जब साल का आख़िर आया तो कहने लगे कि मेरे पास सिवाए चंद कप चावलों के कुछ भी नहीं था। थोड़े से चावल थे। किलो डेढ़ किलो चावल होंगे। उन्होंने चावल बेच दिए और अपना वादा पूरा कर दिया। वह कहते हैं कि इस से अगले दिन मेरे एक दौर के रिश्तेदार ने एक बोरी चावल और कुछ रक़म बतौर तोहफ़ा मुझे भिजवाई और कहते हैं मेरा बड़ा ईमान मज़बूत हुआ कि मैंने तो चंद कप अल्लाह की राह में दिए थे। अल्लाह तआला ने इस के बदले में मुझे सौ किलो भी दे दिए और कुछ रक़म भी दे दी।

फिर गिनी बसाऊ के मुबल्लिग़ लिखते हैं, इस में भी ग़रीबों की क़ुर्बानी का स्तर है और फिर अल्लाह तआला उनका ईमान किस तरह ताज़ा करता है। कबूडो जमाअत के मैंबर दयालू साहिब हैं। उन्हें जब चंदा तहरीक जदीद के महत्तव का बताया गया तो उसी वक़्त उन्होंने अपने जेब में हाथ डाला और जेब में हज़ार सेफ़ाकी जो रक़म थी वह तहरीक जदीद में अदा कर दी और कहने लगे कि इस रक़म से में अपने बच्चों के लिए खाने की चीज़ें लेने के लिए बाज़ार जा रहा था और चंदा देने के बाद दोबारा घर गए। घर में अब पैसे तो थे नहीं। मछली पकड़ते थे तो उन्होंने फ़िशिंग का सामान लिया और फ़िशिंग के लिए चले गए ताकि बच्चों के खाने के लिए कुछ सामान कर सकें। नैट से फ़िशिंग करते थे। कहते हैं कि मैंने फ़िशिंग के लिए नैट फेंका तो एक घंटे के अंदर अंदर अल्लाह तआला ने 73 किलो मछली से मेरा नैट भर दिया और दूसरे मछेरे जो साथ थे उन्होंने भी देखा और कहा कि तुम बड़े ख़ुश-क़िस्मत हो कि एक घंटे के अंदर तुम्हें इतनी मछली मिल गई है कि सारी रात में हमें इतनी मछली नहीं मिलती। तो कहते हैं उस वक़्त मैंने यही सोचा और बताया कि यह तहरीक जदीद के चंदे की बरकत है जो अभी एक घंटा पहले मैंने अदा किया था और जितनी रक़म थी सब कुछ दे दिया था। उस पर वह फिर दोबारा मिशन हाऊस आए क्योंकि आय ज़्यादा हो चुकी थी और फिर दोबारा उन्होंने चंदा दिया। ग़रीब हैं तो उनके दिल भी बड़े खुले हैं। अल्लाह तआला जब नवाज़ता है तो दिल बंद नहीं हो जाते, हाथ बंद नहीं हो जाते बल्कि फिर भी वह अदा करते हैं ताकि अल्लाह तआला और अधिक नवाज़े।

फिर कांगो से अमीर साहिब लिखते हैं कि क्षेत्र बंद विंदू की जमाअत के स्थानीय मुअल्लिम ने जमाअत के लगों को तहरीक जदीद के हवाले से तहरीक की और मैंने जमाअतों को यह कहा हुआ है कि कोशिश करें कि शामिल होने वालों की संख्या ज़्यादा से ज़्यादा बढ़ाएं। तो मेरी यह बात जब उन्हें बताई उस वक़्त गांव वालों के पास चंदे देने के लिए कोई रक़म नहीं थी। ग़रीब लोग थे। छोटा सा गांव था। इस पर स्थानीय लोगों ने कहा कि चंदा तो देना है। वह जंगल में गए, लक्कड़ी काटी, फिर उस का कोयला बनाया। वहां पर गांव में तो कोई ख़रीदार नहीं था। कांगो में दरिया बहुत हैं और पानी के द्वारा अक्सर सफ़र होता है। तो इस कोयला की बोरीयां लेकर किश्ती का एक मुश्किल सफ़र किया और फिर एक शहर में ले के आए और फिर उसे बेच दिय और इस फ़रोख़त से उनको छयानवे हज़ार फ्रॉंक जो मिले वह इजतिमाई तौर पर गांव वालों ने तहरीक जदीद में अदा कर दिए। अत: अजीब किस्म के लोग हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस-सलाम को अल्लाह तआला ने प्रदान फ़रमाए हैं जिनके बारे में आपने अपनी ज़िन्दगी में भी फ़रमाया कि नमूने देखकर मुझे हैरत होती है कि किस तरह ये लोग क़ुर्बानियां करते हैं।

(उद्धरित ज़मीमा रिसाला अंजाम आथम। ख़ज़ायन भाग 11 पृष्ठ 313 हाशिया)

तहरीक जदीद के आरम्भ में हज़रत मुसल्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो ग़रीब लोगों की क़ुर्बानी के जो स्तर वर्णन फ़रमाते थे कि किसी के पास अंडे हैं तो वह औरत अंडे ले आई, किसी के पास थोड़े से पैसे हैं तो वह ले आया, वह आज भी हमें देखने को मिलते हैं कि किस तरह अल्लाह तआला की तवज्जा लेने के लिए लोग अल्लाह तआला की प्रसन्नता के लिए ख़र्च करते हैं। गिनी बसाऊ के मुबल्लिग़ लिखते हैं कि हमारे देश के एक दौर दराज़ के क्षेत्र कबूकरे (Cabucare)की एक अहमदी औरत हैं। पच्चास साल उनकी उम्र है। काफ़ी ग़रीब हैं। कोई भी आय उनके पास नहीं। और कहते हैं कुछ समय पहले लोगों को तहरीक जदीद के चंदे की नसीहत की गई। उन्होंने नीयत की कि और तो कुछ मेरे पास है नहीं। एक छोटी मुर्ग़ी है इस को पाल के बड़ा करूँगी और इस को बेच के अपना चंदा तहरीक जदीद अदा करूँगी। कुछ समय गुज़रने के बाद वहां मुर्ग़ीयों में बीमीरी फैली और उनकी मुर्ग़ी भी एक दिन बीमार हो गई। रिश्तेदारों ने, घर वालों ने कहा कि इस मुर्ग़ी ने मर जाना है। इस को ज़बह कर लो। उन्होंने कहा नहीं। इस को मैंने ज़बह नहीं करना। उन्होंने दुआ की कि हे अल्लाह मेरे पास तो और कुछ है नहीं सिवाए उस मुर्ग़ी के। तू ही है मदद कर और इस को बचा ले। कहती हैं अगले दिन उठी तो वह मुर्ग़ी सेहत मंद थी। बड़ी हुई और उन्होंने जा के वह बीस दिनों के बाद फिर मुअल्लिम को दे दी कि मेरी ये मुर्ग़ी चंदा है। लोग कहते हैं कि हमें निशान नज़र नहीं आते अगर देखने हों, अल्लाह तआला से सही सम्बन्ध हो और नीयत नेक हो तो अल्लाह तआला निशान भी दिखाता है और यह छोटे छोटे निशान ही हैं जो उन लोगों के ईमान में वृद्धि का कारण बनते हैं तो अल्लाह तआला इस तरह भी उन लोगों के ईमान को बढ़ाता है

अल्लाह तआला के सुलूक की एक और उदाहरण यह है तनज़ानिया मारा (Mara) क्षेत्र के मुअल्लिम कहते हैं कि एक मुख़लिस अहमदी नौजवान राशिद हुसैन साहिब की राशन इत्यादि की छोटी सी दुकान है। वादा के अनुसार उन्होंने अपना मुकम्मल चंदा तहरीक जदीद अदा कर दिया था और जब साल के अन्त पर मुअल्लिम ने और अधिक तहरीक की कि जो देना चाहें वे दे सकते हैं तो वे तो इस जुमरे में नहीं आते थे क्योंकि इन दिनों में उनकी माली हालत तंग थी और दुकान पर सिर्फ एक ऐसा सामान रह गया था जिसके जल्दी बिक जाने की भी कोई उम्मीद नज़र नहीं आती थी। बहरहाल कहते हैं कि मेरे पास सिर्फ तीन हज़ार शलंग थे जो उन्होंने दे दिए और इसी शाम को वह दोबारा मुअल्लिम के पास आए। कहते हैं कि मेरे साथ अजीब घटना पेश आई कि बावजूद इस के कि मेरे पास इस रक़म के इलावा और कुछ नहीं था जो मैंने चंदे में दे दी थी और सामान भी मेरी दुकान पर ऐसा मौजूद था कि बड़ी फ़िक्र थी कि इस सामान को तो लोग ख़रीदेंगे नहीं लेकिन अल्लाह तआला ने चंदे की बरकत से मेरी ग़ैरमामूली तरीक़ा पर एक अजीब मदद फ़रमाई कि दोपहर में ही मेरे पास एक ग्राहक आया जिसने सामान ख़रीदा और वह

सारा सामान जिसको मैं समझता था कि शीघ्र बिक नहीं सकता वह ख़रीदा और तेईस हज़ार शलंग सामान के बेचने के बाद मेरे पास जमा हो गए हैं और कहते हैं कि मुझे तो यही है कि चंदे की बरकत से अल्लाह तआला ने ये सब रिज़्क़ प्रदान फ़रमाया है।

फिर सैंटर्ल अफ्रीक़ा के शहर बाँगी के एक साहिब आर जाना साहिब हैं। उनकी भी घटना है। इस में देखें कि अल्लाह तआला ईमान मज़बूत करने के लिए किस--किस तरह नवाज़ता है। यह नौ अहमदी हैं और कहते हैं कि अहमदियत क़बूल किए मुझे आठ महीने हुए थे और इस आठ महीने में मेरे अंदर बड़ी तबदीली पैदा हुई। ऐम टी ए भी स्थायी देखता था और ऐम टी ए पर ख़ुत्बा जुम्अ: भी मैं सुनता था। कहते हैं मैंने जब आपका ख़ुतबा सुना और मेरी आदत थी कि मैं ख़ुत्बा सुना करता था। कहते हैं एक दिन मैंने जब ख़ुत्बे में यह शब्द सुने कि अल्लाह की राह में ख़र्च करने वाला ग़रीब नहीं होता और अल्लाह तआला उस के माल में बरकत डालता है। इस वक़्त तहरीक जदीद की वसूली के बारे में मुबल्लिग़ भी तहरीक कर रहे थे तो मैंने कहा मैं भी देखता हूँ। मेरी जेब में इस वक़्त सिर्फ पाँच सौ फ्रॉंक थे। बहुत थोड़ी रक़म थी। मैंने वे दे दिए और फ़िक्र मेरा ये था कि रात को क्या खाऊंगा। फिर कहते हैं मुझे ख़लीफ़तुल मसीह की यह बात याद आ गई कि ख़ुदा बढ़ा कर देता है। तो मैंने तो वह पाँच सौ फ्रॉंक दे दिए थे। यह नई बैअत करने वाले थे। ईमान में कमज़ोरी भी थी। मतलब है कि इस तरह कामिल ईमान अभी नहीं हुआ था लेकिन बहरहाल तबदीलियां पैदा हो रही थीं। नीयत नेक थी। कहते हैं कि मैं इस वक़्त तीन चार घंटे के लिए इस उम्मीद पर मिशन हाऊस में रुक गया कि अब देखता हूँ कि अल्लाह तआला कैसा नज़ारा दिखाता है तो इसी दौरान एक रिश्तेदार का टेलीफ़ोन आया कि मेरे पास हीरे हैं जो मैंने तुम्हारे शहर में आकर बेचने हैं और मेरी यहां वाक़फ़ीयत नहीं है तो मैं चाहता हूँ कि तुम मेरी मदद करो। अत: कहते हैं वह वहां पहुंचे तो मैं उनको लेकर एक हीरे के व्यापारी के पास गया। वहां हीरों का कारोबार भी होता है। और हीरे फ़रोख़्त करने के बाद वह जो मेरे दोस्त थे या अज़ीज़ थे जो हीरे लेकर आए थे उन्होंने जब हीरे फ़रोख़्त किए तो कहते हैं उस के बाद उन्होंने मुझे सत्ताईस हज़ार फ्रॉंक तोहफ़े के तौर पर दिए और सिर्फ यही नहीं बल्कि कहते हैं ख़रीदने वाले ने भी दस हज़ार फ्रॉंक तोहफे में दिए। कहते हैं इस दिन मुझे पता लगा कि मैंने अभी पाँच सौ फ्रॉंक दिया था तो अल्लाह तआला ने मुझे चंद घंटों में ही सैंतीस हज़ार फ्रॉंक से नवाज़ दिया और कहते हैं इस से मेरे ईमान में बड़ी तरक्की हुई।

यू के से एक औरत हैं अल्लाह तआला ने उनसे भी किस तरह सुलूक फ़रमाया कि उनके ईमान में इज़ाफ़ा हुआ। कहती हैं कि मैं तहरीक जदीद का चंदा अदा कर चुकी थी। फिर स्थानीय सदर साहिबा की तरफ़ से एक पैग़ाम प्राप्त हुआ कि हमें अपना टार्गेट पूरा करने के लिए अधिक रक़म की ज़रूरत है। इस वक़्त मैंने सोचा कि मज़ीद चंदा नहीं अदा कर सकती क्योंकि मेरे पास जो पैसे हैं वे कहीं और इस्तिमाल करने हैं। फिर कहती हैं कि बहरहाल मैंने आख़िर में मज़ीद चंदा देने का फ़ैसला कर लिया और जो रक़म मेरे पास पड़ी हुई थी वह सारी चंदे में अदा कर दी। अगले दिन मैंने अपना बंक एकाऊंट देखा तो हैरान रह गई कि जितनी रक़म मैंने चंदे में अदा की थी इस से चार गुना मेरे काम की तरफ़ से एकाऊंट में डाली गई थी जिसकी मुझे हरिगज़ कोई उम्मीद नहीं थी। अफ्रीक़ा में ही नहीं यहां यूरोप में भी जो लोग नेक नीयती से करते हैं, उनको भी अल्लाह तआला बरकत डालता है और उदाहरण भी हैं।

फिर बुर्कीना फासो के अमीर साहिब लिखते हैं कि कोलो में एक साहिब सावाड्डो साहिब हैं। तहरीक जदीद के चंदे में हर माह सौ फ्रॉंक दिया करते थे। उन्हें एक बार किसी ने तोहफ़े में तीन बकरे दिए जिसमें से एक उन्होंने तहरीक जदीद में दे दिया और दो अपने पास रख लिए। अल्लाह तआला ने उनके बकरों में इतनी बरकत डाली है कि वह अब कई जानवरों के मालिक हैं और अब उन्होंने सौ के बजाय हज़ार फ्रॉंक महीने का देना शुरू कर दिया है।

फिर इख़लास और वफ़ा और क़ुर्बानी की जो भावना है इस का एक और उदाह-रण यह है। बेनिन के क्षेत्र लू कोसा के मुबल्लिग़ लिखते हैं कि लू कोसा के अक्सर इलाक़ों में सेलाब आया हुआ था और जाने के सब रास्ते बंद थे। कुछ जमाअतों से तो फ़ोन के माध्यम से सम्पर्क हो गया था लेकिन बॉर्डर एरिया होने की वजह से अक्सर जमाअतों से सम्पर्क नहीं हो रहा था। लोकल मिशनरी ने परामर्श दिया कि पुलिस वालों के पास मोटरबोट है। अगर हम उनसे बात करें तो हो सकता है कि इन इलाक़ों तक हम जा सकें और लोगों का पता कर सकें कि उनके क्या हाल हैं ? कहते हैं कि पुलिस से बात की तो पुलिस वालों ने इस शर्त पर हमें ले जाने पर हामी भर ली कि हम पैट्रोल डलवा दें। बहरहाल मोटरबोट पर हम वहां पहुंचे तो वहां के जो सदर जमाअत हैं जब उनसे हम मिले तो वह सदर जमाअत रो पड़े। कहते हैं हमें पता था कि उनका काफ़ी नुक़्सान हुआ है। फ़सलें भी तबाह हो गई हैं। घर का एक कमरा भी उनका गिर गया था। और कहते हैं मैंने उन्हें तसल्ली दी कि अल्लाह तआला फ़ज़ल फ़रमाएगा ,नुक़्सान पूरा हो जाएगा तो इस पर वह कहने लगे कि मैं इस वजह से नहीं रो रहा कि मेरा नुक़्सान हुआ है बल्कि सेलाब के आने से पहले मैंने अपना चंदा जमा कर के रखा हुआ था और इंतिज़ार में था कि मुअल्लिम कब आए तो मैं चंदा दूं लेकिन फिर सेलाब की वजह से समस्त रास्ते बंद हो गए और मुझे उस की बड़ी फ़िक्र थी । मैंने दुआ की कि तआला! मेरा चंदा मर्कज़ में पहुंचाने का अब कोई माध्यम नहीं है और दिन भी थोड़े रह गए हैं ,कोई माध्यम बना दे तो आज जब आप लोग यह देखने के लिए आए हैं कि हम किस हाल में हैं ना यह कि चंदा लेने आए थे तो इस वजह से मैं बे-इख़्तियार रो पड़ा कि अल्लाह तआला ने कितनी जल्दी मेरी दुआ क़बूल कर ली और मैं अपने इस फ़र्ज़ को पूरा करने के योग्य हुआ। अपने नुक़्सान की कोई फ़िक्र नहीं। फ़िक्र है तो यह कि मैंने जो काम अल्लाह के लिए करने का वादा किया है जो क़ुर्बानी मैंने ख़ुदा तआला की तवज्जा हासिल करने के लिए देनी थी उस की अदायगी वक़्त पर हो जाए ।

इंडिया से इब्राहीम साहिब इन्सपैक्टर तहरीक जदीद कर्नाटक प्रान्त के लिखते हैं और इस में भी अल्लाह तआला के सुलूक की एक और मिसाल है। गुलबर्गा के एक ख़ादिम हैं। उनको बैंगलौर की एक कंपनी में बीस हज़ार रुपए मासिक पर एक नौकरी मिली थी। कहते हैं उन्हें हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो की वर्णन की गई म्यारी क़ुर्बानी के हवाले से आधी तनख़्वाह पेश करने की तहरीक की गई (उद्धिरत ख़ुत्बाते महमूद भाग 28 सफ़ा173 ख़ुत्बा जुमा फ़र्मूदा 9 मई 1947 ई) तो बावजूद उस के कि उनके घर के आर्थिक हालात ठीक नहीं थे फिर भी उन्होंने दस हज़ार रुपए का वादा पेश कर दिया उनके रिश्तेदार कहने लगे कि अभी तुम्हें नई नौकीर मिली है। इतना वादा तुम्हें नहीं करना चाहिए। एक महीने की तनख़्वाह का आधा वादा नहीं करना चाहिए, मुश्किल पेश आएगी तो महोदय ने कहा कि हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्ना ने जब यह फ़रमाया है कि जब तक इन्सान पूरी कोशिश नहीं करता ख़ुदा तआला के फ़रिश्ते इस में ज़ोर और ताक़त पैदा नहीं करते (उद्धरित ख़ुत्बाते महमूद भाग 32 पृष्ठ 136 ख़ुत्बा जुमा फ़र्मूदा 7 सितम्बर1951 ई)तो इस वजह से बहरहाल मैंने तो यह देना है। कहते हैं इस बात को अभी कुछ दिन गुज़रे थे कि उन्हें एक दूसरी कंपनी में नौकरी मिल गई जहां वह अल्लाह तआला के फ़ज़ल से एक लाख सत्ताईस हज़ार रुपए मासिक तनख़्वाह पा रहे हैं और कहते हैं कि यह भी चंदे की बरकत से ही हुआ है।

फिर इंडिया के प्रान्त केरला के इन्सपैक्टर तहरीक जदीद हैं, वह लिखते हैं कि यहां कैरोलाई के हमारे एक मुख़लिस अहमदी हैं। तहरीक जदीद की माली क़ुर्बानी पेश करने वालों में बड़ी मुमताज़ हैसियत वाले हैं और बड़ा स्थान रखते हैं। महोदय का फ़र्नीचर का कारोबार है और वकीलुल माल के दौरे के दौरान उन्होंने दुआ के उद्देस्य से अपनी फ़ैक्ट्रीज़ दिखाएंगे बल्कि इस बात का वर्णन किया कि इन दिनों कारोबारी हालात अच्छे नहीं हैं और दुआ के लिए खासतौर पर कहा तो वहां दुआ करवाई। बहरहाल उस के बावजूद महोदय ने अपना जो इस साल का चंदा था वह पंद्रह लाख का वादा लिखवाया लेकिन सारा साल वादा के मुक़ाबला पर सिर्फ दो लाख अदा हो सके। वक़्त कम था तो बड़े परेशान थे। बड़े व्याकुल थे। इसी फ़िक्र में थे कि किस तरह ये चंदा अदा होगा और मुझे भी वह ख़त लिखते रहे। माली साल के आख़िरी दिन यही ख़त लिखा कि माली साल के आख़िरी दिन हैं दुआ करें अल्लाह तआला अपने फ़ज़ल से वादा पूरा करने की तौफ़ीक़ दे। कहते हैं अभी चंद घंटे ही गुज़रे थे कि एक बड़ी रक़म उनके एकाऊंट में आई जिससे उन्होंने ना सिर्फ अपने किए गए वादा की अदायगी की बल्कि एक बड़ी रक़म अधिक भी अदा कर दी और कारोबारी सिलसिले में जो उनको रक़म चाहिए थी उस की ज़रूरत भी इस से पूरी हो गई।

फिर बेनिन के क्षेत्र नाती टंगो (Natitingou) के मुअल्लिम लिखते हैं कि कतम पोती (Katampoti) जमाअत के एक दोस्त हैं। जब उनको कहा गया तो बिना किसी देरी के उन्होंने तीन हज़ार फ्रॉंक सेफ़ा निकाल कर पेश कर दिया। मुअल्लिम कहते हैं कि मैंने उनसे बड़ा हैरान हो कर पूछा क्योंकि बड़ी ताकीद के बावजूद भी उन्होंने कभी आज तक पाँच सौ सेफ़ा से ज़्यादा नहीं दिया था कि तुमने इतना बढ़ा किस तरह दिया ? वजह क्या है? तो कहने लगे कि मैं चंदे में सुस्ती बहुत करता हूँ। तो मैंने देखा है परेशानियाँ बढ़ जाती हैं और फ़सल भी अच्छी नहीं होती और आख़िरी बार जब मैंने चंदा दिया था तो यह सोच कर दिया था कि देखता हूँ

उस की बरकत से किस तरह लाभान्वित होता हूँ। अत: मैंने तजुर्बा कर के देखा है कि चंदे की बरकतें से ख़ुदा तआला वास्तव में पोशीदा तौर पर सहायता फ़रमाता है। हमारी ज़रूरीयात पूरी फ़रमाता है। फ़सल में बरकत प्रदान फ़रमाता है और इसलिए मैंने जब ख़ुद तजुर्बा कर लिया है तो आपके कहने से पहले ही मैंने ख़ुद ही अपना चंदा पाँच गुना बढ़ा कर बल्कि छ: गुना बढ़ा कर दे दिया है।

कैनेडा में वान जमाअत के बच्चों की एक मिसाल है। वहां के सदर कहते हैं कि अक्तूबर में हम जमाअत के तहरीक जदीद के वादों को मुकम्मल करने के लिए काम कर रहे थे तो बच्चों को भी और घर के बच्चों को भी नसीहत की। उन्होंने भी अपने जेब ख़र्च में से अपने वादा से ज़्यादा चंदा अदा किया। एक बेटी जिसने अभी इंजनीयरिंग मुकम्मल की है इस के पास कुछ रक़म थी उसने वह सारी रक़म चंदे में अदा कर दी। और पहले वह इंटरव्यू दे रही थी नौकरी के लिए कामयाबी नहीं हो रही थी, जिस दिन यह चंदा अदा किया इस से अगले रोज़ ही एक जॉब के लिए इंटरव्यू हुआ था। वापस आई तो बड़ी ख़ुश थी कि इस के साथ इंटरव्यू के दौरान भी कोई ग़ैबी ताक़त थी और बड़ा आसानी से सब कुछ हो गया और जिस कंपनी में इंटरव्यू देने गई थी वहां और भी काफ़ी लोगों ने इंटरव्यू दिया था वह कह रही थी कि इंटरव्यू तो बहुत अच्छा हुआ है लेकिन नतीजा साल के आख़िर में पता लगेगा लेकिन दो दिन बाद ही इस बेटी को काल आ गई कि तुम्हें सिलेक्ट कर लिया गया है और फरवरी 2020 ई से काम शुरू करना होगा। फिर अगले दिन काल आई कि बाक़ी लोग फरवरी में शुरू करेंगे लेकिन तुम इसी साल नवम्बर से शुरू कर सकती हो। इस से इस बच्ची के भी ईमान को मज़बूती पहुंची। ईमान में वृद्धि हुई और उसने अल्लाह तआला के फ़ज़लों को देखा।

अब हर देश में अल्लाह तआला लोगों को क़ुर्बानी के बाद अपने फ़ज़लों के नज़ारे दिखाता है। मास्को के मुबल्लिग़ लिखते हैं, एक दोस्त ज़ाइर साहिब हैं। उज़बेकिस्तान के शहर बुख़ारा से उनका सम्बन्ध है। लम्बे समय से मास्को में काम करने के लिए आते हैं। कुछ अर्से के लिए यहां काम करते हैं। फिर जो रक़म जमा होती है इस के साथ उज़बेकिस्तान वापस चले जाते हैं। उनकी पत्नी ने बैअत करने में पहले कुछ ताम्मुल से काम लिया था लेकिन फिर अध्ययन किया, दुआ की और इस के बाद बैअत की तौफ़ीक़ पाई। कुछ समय पहले उन्हें चंदा तहरीक जदीद की तरफ़ तवज्जा दिलाई गई। उनकी पत्नी के हवाले से भी कहा कि तहरीक जदीद और वक़्फ़ जदीद में हिस्सा लें तो उन्होंने बताया कि वह आजकल उज़बेकिस्तान में टैक्सी चला रहे हैं और उनकी पत्नी सिलाई का काम करती हैं। दोनों मियां बीवी ने यह उसूल बनाया हुआ है कि अपनी आय के तीन हिस्से करते हैं जिसमें से एक बच्चों के लिए, एक हिस्सा घर के लिए और एक चन्दा के रूप में अल्लाह तआला की राह में क़ुर्बानी के लिए निर्धारित कर रखा है। इस तरह दोनों मियां बीवी सन्तुष्ट और शान्ति हैं और घरेलू ज़िन्दगी भी ख़ुश-हाल गुज़र रही है। ज़ाइर साहिब कहते हैं कि जब से उन्होंने चंदों में हिस्सा लेना शुरू किया है अल्लाह तआला ने ख़ास बरकत प्रदान फ़रमाई है और उनकी आय में इतनी बरकत पड़ी है कि पिछले सालों में कभी ऐसा नहीं हुआ।

फिर रशिया से ही मुबल्लिग़ इंचार्ज लिखते हैं। मास्को के रुसलान साहिब हैं शेफ़ के तौर पर काम करते हैं। कुछ समय पहले उन्होंने घर बनाने के लिए एक बहुत बड़ी रक़म क़र्ज़ के तौर पर हासिल की और बड़ी अर्से से दोगुना काम कर के क़र्ज़ उतारने की कोशिश कर रहे थे। एक दिन उनका फ़ोन आया कि मैं अब फ़ौरी तौर पर आपको चंदा भेजना चाहता हूँ। पूछने पर उन्होंने बताया कि जिस जगह वह पहले काम करते थे वहां उनकी जो मज़दूरी थी, क़ीमत थी इस में से उनकी एक बड़ी रक़म मालिक के पास फंसी हुई थी और इस हवाले से दुआ के लिए भी उन्होंने लिखा था तो अल्लाह तआला ने वह डूबी हुई रक़म केवल अपने फ़ज़ल से वापस दिलवाई है। कहते हैं इस पर मेरे दिल में यह ख़ाहिश पैदा हुई कि मैं जितनी जल्दी हो सके चंदा अदा करूँ और फिर उसी वक़्त उन्होंने चंदे के लिए अपने हालात के एतबार से एक बड़ी रक़म मुरब्बी साहिब को दे दी।

जर्मनी की जमाअत से एक बच्ची है वह लिखती हैं कि मैं दो माह से गर्भवती थी। अब उनका बच्चा पैदा भी हो गया और दो साल का भी हो गया और कहती हैं जब मैं गर्भवती थी उस वक़्त मैंने दुआ की, बहुत दुआ की और मैंने वादा किया कि हर महीने तहरीक जदीद में सौ यूरो दूँगी। बाक़ी सात माह अल्लाह तआला ने ख़ैरीयत से गुज़ार दिए। कोई पेचीदगियां थीं वह दूर हो गईं। अल्लाह तआला ने अपने फ़ज़ल से बेटे से नवाज़ा और कहती हैं अब भी मैं अल्लाह तआला से किया हुआ वादा हर माह तहरीक जदीद में चंदा अदा कर के पूरा कर रही हूँ।

दुनिया के इस हिस्से में जो माद्दियत में डूबा हुआ है और ख़ुदा से दूरी पैदा हो रही है यहां अल्लाह तआला अहमदियों को अपने फ़ज़लों से नवाज़ कर जहां अपने वजूद का पता देता है वहां अहमदियत की हक़ीक़त और सच्चाई भी उन पर ज़ाहिर हो रही है।

लट्टूया के मुबल्लिग़ लिखते हैं कि लट्टूया के एक अहमदी वहीदूफ़ साहिब हैं उनका ताल्लुक़ भी उज़बेकिस्तान के सूबा बुख़ारा से है। कुछ साल पहले उनको अहमदियत क़बूल करने की तौफ़ीक़ मिली। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से इख़लास वफ़ा उनका बढ़ता चला जा रहा है। उनके घर वालों से नेक सुलूक को देखकर पिछले वर्ष उनकी पत्नी भी बैअत कर के जमाअत में शामिल हुईं। कहते हैं कि उन्होंने मुझे फ़ोन पर चंदे की अदायगी के हवाले से बताया। कहते हैं छ: माह उज़बेकिस्तान में काम करता हूँ और छ: माह रशिया जा कर काम करता हूँ। इस साल बुख़ारा शहर में एक फ़्लैट ख़रीदा था जिसके लिए मुझे अपनी गाड़ी बेचनी पड़ी। कहते हैं जब मैं काम करने रशिया गया तो मैंने सोचा कि अल्लाह तआला से एक सौदा करना चाहिए। अत: मैंने इस नीयत से चंदा देना शुरू किया कि अल्लाह तआला मुझे चंदे की बरकत से गाड़ी ख़रीदने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए। चंदा अदा करने के बाद अल्लाह तआला ने मेरे काम में इतनी बरकत दी कि मेरे पास घरेलू ज़रूरतों के इलावा गाड़ी ख़रीदने के लिए भी एक उचित रक़म जमा हो गई। अत: मैंने बुख़ारा वापस आकर अपनी गाड़ी ख़रीद ली और इस पहली गाड़ी से भी अच्छी ख़रीदी है जो फ़्लैट ख़रीदने के लिए मुझे बेचनी पड़ी थी और कहते हैं कि यह सिर्फ़ चंदे की बरकत का नतीजा है वर्ना इतनी बड़ी रक़म जमा करना मेरे लिए नामुमकिन था और ,कुछ समय पहले उसने बैअत की थी। कहते हैं मेरे ईमान में भी इज़ाफ़ा किया।

गिनी बसाऊ के मुबल्लिग़ कहते हैं कि एक साहिब हैं और जो बावजूद पैदाइशी अहमदी होने के और बावजूद बार-बार की तलक़ीन के तहरीक जदीद में हिस्सा नहीं लेते थे। उन्होंने ब्लॉक्स बनाने का कारोबार शुरू किया और सीमेंट की चालीस बोरियों से उन्होंने ब्लॉक्स बनाए। रात को बारिश हुई, सारे ब्लॉक्स ख़राब हो गए और मुकम्मल नुक़्सान हो गया। कहते हैं रात को बड़ी परेशानी की अवस्था में सोया तो ख़्वाब में मैंने देखा कि मेरे मरहूम पिता जी आए हैं तो उनको कहते हैं क्या तुम ने अपने चंदे अदा कर दिए हैं? यह कहने के बाद वह चले गए। अत: इदरीस साहिब कहते हैं कि सुबह उठते ही मैं मिशन हाऊस आया और वहां मिशनरी को कहने लगे कि आपने चंदा तहरीक जदीद की नसीहत की थी। मेरे पास अभी सिर्फ दो हज़ार फ्रॉंक हैं जो मैं अभी अदा करना चाहता हूँ और चंदा अदा करने के बाद अगले ही दिन अल्लाह तआला ने उनका जो नुक़्सान हुआ था उसे इस तरह पूरा किया कि उनको नया contract मिल गया जो आठ लाख सीफ़े का था और उनके कर्ज़े भी उतर गए और अल्लाह के फ़ज़ल से उन्होंने अब वसीयत भी कर ली है और उन के ईमान में भी इज़ाफ़ा हुआ है।

माईवट आईलैंड के एक दोस्त अली मुहम्मद साहिब हैं। उनके पास कोई स्थायी काम नहीं था लेकिन कहते हैं जब से मैंने तहरीक जदीद का चंदा अदा किया है मुझे काम ढूढ़ने में कोई दिक़्क़त नहीं रही। एक काम ख़त्म होता है दूसरा मिल जाता है और चंदे की अदायगी के बाद अब तक निरन्तर काम मिल रहा है। यह नई जमाअत है जो चंद साल हुए क़ायम हुई है लेकिन ईमान और इख़लास में बड़ी बढ़ने वाली जमाअत है।

फिर अमीर साहिब इंडोनेशिया लिखते हैं कि एक जमाअत पगंटान (Pagentan) में एक अहमदी ओरयानो(Waryono) साहिब हैं जो अकेले रहते हैं उनकी बीवी वफात पा चुकी है। उन्होंने चंदा देने के लिए कैसे कैसे तरीक़े धारण किए हुए हैं कि हैरत होती है। बड़ा इख़लास तथा वफ़ा उन लोगों में है। कहते हैं खेती बाड़ी करते हैं, ग़रीब आदमी हैं। बच्चों की शादियां हो चुकी हैं। बीवी है नहीं। तब्लीग़ तर्बीयत के काम में अक्सर मुबल्लिग़ का साथ देते हैं। छोटा सा एक खेत उनके पास है और किसानों की आय तो चंद महीनों बाद ही होती है, हर तीन या चार महीने के बाद आय होती है लेकिन इस खेत की जो आय है वह चंदा बाक़ायदगी से हर महीने अदा करते हैं। एक बार मुबल्लिग़ ने उन्हें पूछा कि आपकी फ़सल तो तीन चार महीने के बाद होती है लेकिन चंदा आप बाक़ायदगी से अदा करते हैं तो इस पर उन्होंने बताया कि मैंने भी बाक़ायदगी से चंदा देने का एक तरीक़ा इख़तियार किया हुआ है। मैंने अपने खेत का एक हिस्सा मुख़तस कर के इस पर सिर्फ केले के दरख़्त लगाए हुए हैं और इस तरीक़े से लगाए हुए हैं कि एक दरख़्त लगाने के कुछ अर्से बाद दूसरा लगाया अर्थात कुछ हिस्सा लगाने के बाद कुछ दूसरा हिस्सा लगाया। फिर कुछ अर्से के बाद तीसरा हिस्सा लगाया। केले के जो दरख़्त हैं वे क्योंकि सारा साल ही फल

देते हैं तो वे इस तरह हर महीने फल देते रहते हैं और मैं हर महीने फल काट के बाज़ार बेच देता हूँ और इस से जो रक़म मिलती है वह सारी चंदे में अदा कर रहा हूँ।

फिर इंडोनेशिया के अमीर साहिब ही लिखते हैं कि एक जमाअत पासर पंगारियन (Pasir Pangaraian) के एक नई बैअत करने वाले हैं। कुछ समय पहले उन्होंने बैअत की थी। बीवी की तरफ़ से बहुत विरोध हुआ है लेकिन महोदय दृढ़ता पूर्वक रहे। जब तहरीक जदीद के नए साल का आरम्भ हुआ तो हमारे मुबल्लिग़ ने उनको तहरीक जदीद के माली जिहाद में शामिल होने की तहरीक की। इस पर महोदय ने पाँच लाख इंडोनेशियन रुपए अदा करने का वादा किया। इंडोनेशियन रुपए की वैल्यू (value)बहुत थोड़ी है लेकिन बहरहाल उनके लिए तो बहुत ज़्यादा रक़म थी। एक अस्थायी टीचर हैं जिसकी तनख़्वाह बहुत कम होती है। हमारे मुबल्लिग़ ने उनसे दोबारा पूछा कि इतनी रक़म आपने लिखवा दी है, अदा कर सकेंगे? किसी मुश्किल में ना पड़ जाएं। इस पर उन्होंने बड़े यक़ीन से कहा कि यही मेरा वादा है। अत: रमज़ान के महीने में जब उनको सौ फ़ीसद अदायगी की तलक़ीन की गई तो ये इन दिनों की बात है कि उन्होंने अपना वादा पूरा कर दिया। एक दिन उनके किसी रिश्तेदार ने उनको तोहफे में एक लिफ़ाफ़े में कुछ रक़म दी तो उन्होंने इस लिफ़ाफ़े को खोला नहीं बल्कि फ़ौरन सदर जमाअत के घर आकर कहा कि इस लिफ़ाफ़े में जो कुछ भी हो मैं तहरीक जदीद के लिए देता हूँ। सदर जमाअत ने जब इस लिफ़ाफ़ा को खोला तो देखा कि इस में ठीक पाँच लाख इंडोनेशियन रुपय की रक़म थी जो उन्होंने उसी वक़्त अपने वादा के अनुसार अदा कर दी।

फिर बच्चों में इख़लास और क़ुर्बानी की महत्व का जो एहसास है ये इन्क़िलाब भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत में नज़र आता है जो आप ने पैदा फ़रमाया। घाना के मुबल्लिग़ लिखते हैं कि कुछ समय पहले जमाअत में माली कुर्बानी विशेष रूप से तहरीक जदीद के बारे में ख़ुत्बा दिया और इस बात पर-ज़ोर दिया कि हमें बच्चों को भी कुर्बानी की आदत डालनी चाहिए कि वह अपने हाथ से चंदा दें। इस पर अगले जुमा को नमाज़ जुमा पर एक बच्चा जिसकी उम्र तक़रीबन नौ दस साल होगी कुछ रक़म लेकर आया और तहरीक जदीद की मद में पेश कर दी और पूछने पर उसने बताया कि मैंने माता पिता से चंदे के लिए रक़म मांगी जो किसी वजह से मुझे मिल नहीं सकी, नहीं होगी माता पिता के पास। कहते हैं मैंने इस पर एक दुकान पर मज़दूरी करनी शुरू कर दी और जो रक़म हासिल की वह चंदे में दे रहा हूँ।

फिर सेरालियून का एक उदाहरण है। वहां केनमा के लोकल मुअल्लिम बशीरो साहिब लिखते हैं कि एक जमाअत सैराब्बू (Serabu) मैं जब जमाअत के लोगों को चंदा तहरीक जदीद की अदायगी की तरफ़ तवज्जा दिलाई गई तो इसी दौरान एक बच्चा नौ या दस साल की उम्र का होगा और मैंने देखा कि वह सिर पर आग जलाने वाली कुछ लक्कड़ियों का गट्ठा लेकर आया और उसने मुअल्लिम साहिब से कहा कि यह लकड़ियाँ आप मुझसे ख़रीद लें और जितने पैसे हों वे चंदे में डाल लें। मुअल्लिम साहिब ने वे लकड़ियाँ इस बच्चे से ख़रीद लें और चंदे की रसीद काट दी। बाद में वे लकड़ियाँ भी वापस कर दीं कि तुम्हारा चंदा आ गया है

अल्लाह तआला इन लोगों के माल और ईमान में बहुत बरकत प्रदान फ़रमाए। इस तरह क़ुर्बानी का तसव्वुर यहां के बच्चों में नहीं होगा कि मेहनत कर के, मज़दूरी कर के या जंगल जा के लकड़ियाँ काट कर फिर चंदा अदा करें। यहां हालात अच्छे हैं। बे-शक यहां भी बड़ी अच्छी मिसालें हैं। कुछ बच्चे ऐसे हैं जिन्होंने अपने जेब ख़र्च की पूरी रक़म दे दी। कोई ख़ास चीज़ ख़रीदनी थी उस के लिए रक़म जमा की थी तो वह क़ुर्बानी कर दी। बहरहाल अपने अपने माहौल में हर जगह इख़लास तथा वफ़ा के उदाहरण मिलते हैं। अल्लाह तआला इस इख़लास तथा वफ़ा को बढ़ाता चला जाए।

अब मैं कुछ कवाइफ़ पेश करूँगा। अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत को क़ुर्बानियों की जो तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाई है और जिस तरह ये क़ुर्बानियां करते हैं यह सिवाए अल्लाह तआला के समर्थन और विसेष सहायता के हो तो उस के बग़ैर ये सब कुछ नहीं हो सकता। दिलों को अल्लाह तआला ही बदलता है और अल्लाह तआला ही दुनिया के विभिन्न देशों में रहने वाले अहमदियों के, बड़ों के भी, बच्चों के भी, दिल में डालता है। और अगर कोई अक़ल रखने वाला हो तो वह समझ सकता है कि यही वह बात है जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सदाक़त की दलील है। बहरहाल जैसा कि मैंने कहा कि इस वक़्त मैं कुछ कवाइफ़ प्रस्तुत करूँगा।

अल्लाह तआला के फ़ज़ल से तहरीक जदीद का 85 वां साल31 अक्तूबर को ख़त्म हुआ और 86 वां साल शुरू हो गया है और इस साल तहरीक जदीद के माली निज़ाम में 13 इशारीया 6 मिलियन पाऊंडज़ की क़ुर्बानी की तौफ़ीक़ मिली और यह वसूली पिछले साल की तुलना में अल्लाह तआला के फ़ज़ल से आठ लाख दो हज़ार पाऊंड ज़्यादा है। इस साल पाकिस्तान में तो करंसी की वैल्यू बहुत कम हो गई थी। सयासी हालात ख़राब, आर्थिक हालात ख़राब, बहुत बुरे उनके हालात हैं। अल्लाह तआला उन पर रहम करे। पाकिस्तान के लिए दुआ किया करें। अल्लाह तआला वहां के अहमदियों पर भी फ़ज़ल फ़रमाए। तो वे जो पोज़ीशन होती है वे तो क़ायम नहीं रही। पहली पोज़ीशन अब इस साल मुकम्मल तौर पर जर्मनी की है और इस तरह जर्मनी अव्वल है। फिर दूसरे नंबर पर पाकिस्तान है। फिर बर्तानिया है और क्योंकि पहले में पाकिस्तान को निकाल दिया करता था। पहला नाम उस का होता था और पाकिस्तान के इलावा बाहर के बाक़ी देशों की तफ़सील देता था इसलिए पाकिस्तान के इलावा बावजूद उस के कि इस का दूसरा नंबर है दस मुल्कों की तफ़सील अब भी वर्णन करूँगा। जर्मनी पहला और बाहर के मुल्कों में फिर पाकिस्तान के बाद दूसरा बर्तानिया फिर अमरीका फिर कैनेडा फिर भारत फिर मिडल ईस्ट की एक जमाअत है। फिर इंडोनेशिया फिर आस्ट्रेलिया फिर घाना और फिर दोबारा मिडल ईस्ट का ही देश है।

अल्लाह तआला के फ़ज़ल से बावजूद हालात ख़राब होने के पाकिस्तान में भी और मजमूई तौर पर दुनिया में हर जगह आर्थिक हालात क्योंकि ख़राब हुए हैं, स्थानीय करंसी में इज़ाफ़ा हुआ है तो पहले तीन वृद्धि वाले जो देश हैं इन देशों में किसी एक मिडल ईस्ट के देश के इलावा वहां तो (इज़ाफ़ा है ही फिर नम्बर दो पर भारत है जहां इज़ाफ़ा हुआ है उन्होंने जो इज़ाफ़ा किया है वह प्रति व्यक्ति नहीं प्रितशत तुलना के हिसाब से है। फिर कैनेडा है। फिर जर्मनी है। फिर बर्तानिया। फिर घाना फिर पाकिस्तान, इंडोनेशिया, अमरीका, आस्ट्रेलिया।

प्रति व्यक्ति अदायगी के लिहाज़ से भी पहले तीन देश ये हैं। स्विटज़रलैंड नम्बर एक। फिर अमरीका । फिर सिंगापुर और चौथे नंबर पर बर्तानिया और पांचवें पर स्वीडन उस के बाद अन्य देश हैं।

अफ़्रीक़ी देशों में सामूहिक वसूली के लिहाज़ से नुमायां जमाअतें जो हैं उनमें पहले नम्बर पर घाना है। फिर नाईजीरिया है। फिर बुर्कीना फासो। फिर तनज़ानिया। फिर गेम्बया। फिर बेनिन

पिछले चंद सालों से शामल होने वालों की तरफ़ तवज्जा दी जा रही थी । मैंने कहा था शामिल होने वालों की संख्या बढ़ाएं और इस उद्देश्य से जमाअतों को रक़म से ज़्यादा लोगों को शामिल करने के लिए टार्गेट दिए जा रहे थे और अल्लाह तआला के फ़ज़ल से अब तक इस साल की शामिल होने वालों की जो संख्या है वह अठारह लाख सत्ताईस हज़ार से ऊपर है और एक लाख बारह हज़ार चंदे के निज़ाम में नए शामिल हुए हैं। शामल होने वालों में पिछले साल की तुलना में इज़ाफ़ा करने वाले वर्णन योग्य अफ़्रीकन देशों में नाईजर, सेरालियून, नाईजीरिया और कैमरोन, फिर बेनिन, फिर सेनेगाल, फिर गिनी बसाऊ, इवरी कोस्ट, तनज़ानिया और गिनी कनाकरी हैं और बड़ी जमाअतों में बंग्लादेश, कैनेडा, मलाईशीया, भारत, इंडोनेशि-

अल्लाह तआला का उपदेश

رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ (आले इम्रान 17)

हे हमारे रब्ब निसन्देह हम ईमान ले आए

अतः हमारे गुनाह माफ कर दे और हमें आग के अज़ाब से बचा।

तालिबे दुआ

MUHAMMAD MAJEED AND FAMILY

AMEER DIST: ROUPR. PUNJAB

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का नमूना दिखाओ तब अलबत्ता सफल हो जाओगे।"

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सैक्रेट्री जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

या, जर्मनी, बर्तानिया, अमरीका और हैं।

दफ़्तर अव्वल के खाते जो हैं मर्कज़ी रिकार्ड के मुताबिक़ पाँच हज़ार नौ सौ सत्ताईस हैं। छत्तीस अफ़राद अल्लाह तआला के फ़ज़ल से जो अभी ज़िन्दा हैं वे अपने चंदे ख़ुद अदा कर रहे हैं। बाक़ियों के, फ़ौत होने वालों के खाते उनके विरसा ने और मुख़लसीन जमाअत ने जारी किए हुए हैं।

जर्मनी क्योंकि अव्वल है इस की पहली दस जमाअतें जो हैं उनमें रोइड्र मार्क(Rdermark) नवयस् (Neuss) पने बर्ग (Pinneberg) महदी आबाद(Mehdi-Abad) नेदा (Nieda) ओसना ब्रूक (Osnabruck) कील (Kiel) और फिलरज़हाइम (Flrsheim) और वाइन गार्टन (Weingarten) और कोलोन (Kln) शामिल हैं और उनमें जो पहली दस लोकल इमारतें हैं उनमें हैमबर्ग(Hamburg) नम्बर एक है। फिर फ्रैंकफ़र्ट(Frankfurt) फिर ग्रोस गैराओ (Gross Gerau) फिर मरफ़ील्डन (Mrfelden) डेटसन बाख(Dietzenbach) वेज़ बादिन (Wiesbaden)और रैड शटड (Riedstadt) डाम शटड (Darmstadt) और मन हाइम (Mannheim) रोसलज़ हाइम Rsselsheim)

पाकिस्तान में तहरीक जदीद की क़ुर्बानी में वसूली के लिहाज़ से प्रथम लाहौर। फिर द्वितीय रबवह। फिर तृतीय कराची और ज़िलई सतह पर जो दस ज़िले हैं इस में इस्लामाबाद नम्बर एक, फिर स्यालकोट, फिर फैसलाबाद । फिर गुजरांवाला। फिर उम्रकोट। फिर हैदराबाद। फिर मीरपुर ख़ास। फिर क़सूर, टोबा टेक सिंह, मीरपुर आज़ाद कश्मीर और वसूली के एतबार से ज़्यादा क़ुर्बानी करने वाली पाकिस्तान की शहरी जमाअतों में इमारत डीफ़ैंस लाहौर , इमारत टाउन शिप लाहौर, इमारत कैन्ट रावलपिंडी, इमारत शहर रावलपिंडी फिर मुल्तान फिर इमारत अज़ीज़ाबाद कराची, इमारत दिल्ली गेट लाहौर। फिर कोइटा। फिर पेशावर। फिर बहावल हैं।

पाकिस्तान की जो छोटी जमाअतें हैं उनमें पाँच ये हैं: वाह कैन्ट, साबुन दस्ती, खोखर ग़र्बी, चक नोपनियार और चविंडा।

बर्तानिया के पहले पाँच क्षेत्र जो हैं (उनमें पहले बैयतुल फ़तोह क्षेत्र है। फिर मस्जिद फ़ज़ल क्षेत्र है, फिर मिडलैंडज़ क्षेत्र, बैयतुल अहसान क्षेत्र और इस्लामाबाद क्षेत्र। मजमूई अदायगी के लिहाज़ से बर्तानिया की दस बड़ी जमाअतें मस्जिद फ़ज़ल नम्बर एक पर। फिर वोस्टर पार्क। फिर इस्लामाबाद। फिर आलडर शॉट, पटनी, न्यू मोल्डन, जलंघम, बर्मिंघम वैस्ट, ग्लास्गो और सकंथार्प। छोटी जमाअतें जो हैं उनमें सवानज़ी नंबर एक पर। फिर स्पेन वैली, कैथले, नॉर्थ वेल्ज़, और हैंपटन।

अमरीका की जो जमाअतें हैं उनमें वसूली के लिहाज़ से नम्बर एक सिलवर स्प्रिंगज़। फिर लास एंजलेस, फिर सेलेकोन वैली, सयाटिल, सेंट्रल वर्जीनिया, डिटराइट, शिकागो, ओश कोष, हीवसटन, जॉर्जिया, साउथ वर्जीनिया।

कैनेडा की वसूली के लिहाज़ से लोकल इमारतें वान नम्बर एक, फिर कैलगरी, पीस विलेज, वेनकोवर, मिसिस सागा, सिसकॉटोन। छोटी जमाअतें जो हैं इन पाँच में ऐड मनटुन वैस्ट नम्बर एक पर, फिर दिरहम।फिर ब्रैडफोर्ड। फिर हैमिल्टन। फिर आटवाह वैस्ट।

इंडिया की क़ुर्बानी के लिहाज़ से पहली दस जमाअतें जो हैं वे हैं करोलाई नम्बर एक, फिर कादियान, फिर पत्था परियम, फिर हैदराबाद , कोइम्बटोर, पेंगाड़ी, बेंगलूर, कालीकट, कोलकता,यादगीर।

पहले दस सूबे जो हैं वे ये हैं नंबर एक केराला, फिर कर्नाटक, तामिल नाडू, तेलंगाना, जम्मू कश्मीर, ओड़ीसा, पंजाब, बंगाल, दिल्ली और उत्तरप्रदेश। कश्मीर के भी हालात सयासी भी और आर्थिक लिहाज़ से भी बड़े ख़राब हैं। यहां भी बड़ी क़ुर्बानी है जमाअतों की

मजमूई वसूली के लिहाज़ से आस्ट्रेलिया की दस जमाअतें ये हैं नंबर एक पर कासल हिल, फिर मलबर्न बेरोक, मलबर्न लॉंग वार्न, फिरACT कैनबरा, मार-सिडन पार्क, फिर एडीलाइड साउथ, फिर पेन रथ, माउंट डरोइट, पैरा माटा, फिर एडालिड वैस्ट।

अल्लाह तआला इन सब क़ुर्बानी करने वालों के मालों तथा जानों में बे-इंतिहा बरकत प्रदान फ़रमाए।

(अलफ़ज़ल इंटरनैशनल 29 नवम्बर 2019 पृष्ठ 5 से 9)

☆ ☆ ☆
☆ ☆
☆

पृष्ठ 2 का शेष

विभाग के साथ मिल कर काम कर रहे हैं।

*हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने सेक्रेटरी सनअत तिजारत से मुख़ातब होते हुए फ़रमाया कि आप इस बारे में से क्या कर रहे हैं? वहां से जो आते हैं उनको ज़बान का भी काफ़ी मसला होता है। मिकैनिक या कार पेंटिंग या इस किस्म के काम कर सकते हैं लेकिन ज़बान की वजह से उन्हें मुश्किल होती है। इस पर सेक्रेटरी सनअत व तजारत ने निवेदन किया कि जब लोग आते हैं तो हम उनसे पूछते हैं कि वे क्या करना चाहते हैं या पाकिस्तान में वे क्या करते थे। अगर वो construction का काम करते हूँ तो उनका सम्पर्क किसी contractor से करवा दिया जाता है। इस तरह वो धीरे-धीरे माहौल को देखकर कुछ अपना बिज़नस भी शुरू कर देते हैं।

*हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने पूछने फ़रमाया कि कुछ औरतें हैं जो नौकरियां कर रही हैं लेकिन वे यह नौकरियां छोड़कर कुछ और करना चाहती हैं। आपने ऐसी ख़वातीन के लिए भी कोई मन्सूबा बनाया है? इस पर सेक्रेटरी सनअत तिजारत ने निवेदन किया कि कुछ ख़वातीन के बारे में पता चलता है कि वे सिलाई कढ़ाई का काम जानती हैं। तो हम उन्हें सिलाई मशीनें ख़रीद कर दे देते हैं।

* हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने पूछा कि कुछ अकेली माएं भी बच्चों के साथ आई हैं जिन्होंने या तो अपने खाविंदों को छोड़ दिया है या कइयों के पति उन के साथ नहीं आ सके और कुछ के खाविंदों की वफ़ात भी हो चुकी है। इन के लिए क्या कोशिश कर रहे हैं?

इस पर सेक्रेटरी सनअत तिजारत ने निवेदन किया कि ऐसी तीन फ़ैमिलीयाँ मेरी जमाअत में भी हैं। हम उनके साथ सम्पर्क में हैं। जिन फ़ैमिलियों में कोई मर्द नहीं है उन के लिए हमारी पूरी कोशिश होती है कि कोई ऐसी जॉब तलाश की जाए जो उन के लिए उचित हो। अगर उन्हें सुलाई कढ़ाई आती हो तो विभाग सनअत वतजारत उन के लिए सिलाई मशीनें भी ख़रीद कर मुहय्या कर देता है।

*हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने नेशनल सेक्रेटरी शिक्षा को हिदायत देते हुए फ़रमाया: आपको रिफ्यूजीज़ के बच्चों की भी मदद करनी चाहिए कि वे शिक्षा प्राप्त करें। जिनकी उमरें ज़्यादा हो चुकी हैं और स्कूल में दाख़िला नहीं ले सकते उन की रहनुमाई होनी चाहिए कि वे कौन सा डिप्लोमा कर सकते हैं या कोई professional skill सीख सकते हैं। आप विभाग उमूरे आम्मा से ऐसे लोगों का डैटा प्राप्त कर लें और उनकी रहनुमाई करें। अगर वे प्लंबिंग , मिकैनिक या उस किस्म की दूसरी skills सीख लें तो उन के लिए काम के ज़्यादा अच्छे अवसर होंगे वर्ना वे Uber पर टैक्सी चलानी शुरू कर देते हैं। पता नहीं कब तक Uber चलती है। इन पर केसिज़ इत्यादि चलते रहते हैं। पता नहीं कितनी देर यह कंपनी और अधिक रहती है। इसलिए Uber के अतिरिक्त और भी चीज़ें होनी चाहिऐं। सेक्रेटरी सनअत तथा तिजारत को भी इस बारे में से देखना चाहिए।

*हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने सेक्रेटरी उमूरे आम्मा को हिदायत देते हुए फ़रमाया: औरतों की तरफ़ से शिकायतों में इज़ाफ़ा होता जा रहा है कि जिन जमाअती विभागों में मर्द काम करते हैं वे मर्दों के हक़ में होते हैं और औरतों के हुक़ूक़ को नहीं देखा जाता। ऐसी शिकायतें भी दूर करें।

*इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ के पूछने पर नेशनल सेक्रेटरी ज़याफ़त ने निवेदन किया कि जुम्अ: के दिन ज़याफ़त विभाग ने आठ हज़ार मेहमानों के लिए खाना तैय्यार किया था। और लोगों ने पसन्द भी किया था। खाना पूरा हो गया था लेकिन बारिश की वजह से मार्की में काफी कीचड़ हो गया था जिस के कारण से मुश्किल का सामना करना पड़ा लेकिन इस हवाले से मेहमानों की तरफ से कोई शिकायत नहीं मिली।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रलेहिल अज़ीज़ ने नैशनल सैक्रेटरी माल से पूछ कि जो लोग चंदा अदा करते हैं इस हिसाब से आय per capita क्या बनती है?इस पर सैक्रेटरी माल ने निवेदन किया कि जो लोग वसीयत का चंदा अदा कर रहे हैं इस हिसाब से आमदनी47000 डॉलरज़ सालाना बनती है। और जो लोग चंदा आम अदा करते हैं उनकी इन्कम1518 डॉलरज़ माहाना बन रही है

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रलेहिल अज़ीज़ के पूछने पर सैक्रेटरी माल ने बताया कि अमरीका में वैसे औसत तनख़्वाह हर स्टेट के लिहाज़ से अलग अलगहै। लेकिन प्रापय 32 से 60 हज़ार डॉलरज़ सालाना तनख़्वाह होती है। वैसे

एक आम मज़दूर के लिए 15 डॉलरज़ प्रित घंटा है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रलेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि अगर 15 डॉलरज़ फ़ी घंटा उजरत है तो फिर एक हफ़्ता में चालीस घंटे के हिसाब से सालाना तनख़्वाह तक़रीबन 30 हज़ार डॉलरज़ बनती है लेकिन आपकी ग़ैर मोसियान की इन्कम 15 से 18 हज़ार डॉलरज़ सालाना है जोकि असल आय से नसफ़ है

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रलेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कई टैक्सी ड्राईवरज़ अपनी असल आय के अनुसार चंदा अदा करते हैं। आप उनके चंदों से हिसाब लगा सकते हैं कि उनकी साप्ताहिक या मासिक आय क्या है। इस की बुनियाद पर आप दूसरों को कह सकते हैं कि आप अपनी इन्कम को बढ़ाए। स्थानीय जमअतों के सेकरेट्रयान माल को कहें कि वह इस पर काम करें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रलेहिल अज़ीज़ ने पूछा कि आप लोग अपना बजट कैसे तैयार करते हैं? क्या मुक़ामी सेक्रटरयान माल घर-घर जाकर बजट लिखते हैं ? इस पर सैक्रेटरी माल ने निवेदन किया कि हम सेक्रटरयान माल को यही कहते हैं कि वे हर मैंबर से सम्पर्क करके बजट लिखें लेकिन वे हर मैंबर तक नहीं जाते। इसलिए जब हमें बजट मिलता है तो हम पिछले साल के बजट के साथ तुलना कर लेते हैं। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रलेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया ये दरुस्त तरीक़ नहीं है और न ही मालूमात दरुस्त होती हैं। हर एक के साथ व्यक्तिगत सम्पर्क होना चाहिए

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रलेहिल अज़ीज़ ने नैशनल सैक्रेटरी वसाया से पूछा कि क्या आपने कमाने वाले मैंबर्ज़ की 50 प्रतिशत वसीयतों का टार्गेट मुकम्मल कर लिया है? इस पर सैक्रेटरी वसीयत ने निवेदन किया कि अभी हम अपने टार्गेट से पीछे हैं। अभी 28 प्रतिशत मुकम्मल हुआ है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रलेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया:अगर आप मोसियान की संख्या में वृद्धि कर लें तो आपकी असल आय पर चंदा ना देने की मुश्किल भी किसी हद तक दूर हो जाएगी

सैक्रेटरी वसीयत ने अर्ज़ किया कि हम इस पर काम कर रहे हैं। हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में दुआ की दरख़ास्त है। कुछ जमाअतों ने यह टार्गेट हासिल कर लिया है लेकिन कुछ जमाअतें अभी पीछे हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रलेहिल अज़ीज़ ने इस्तिफ़सार फ़रमाया कि क्या आपके स्थानीय सेकरेटियान वसीयत काम करने वाले हैं? क्या आप उनके कोई रीफ़रेशर कोर्सज़ इत्यादि करवाते हैं या उन से पूछते हैं कि उन्हें किन मसलों का सामना है? इस पर सैक्रेटरी वसीयत ने अर्ज़ किया कि सबसे बड़ी मुश्किल जो सामने आई है वह यही है कि नौजवान कहते हैं कि अभी हमारा तक़्वा का मयार वह नहीं है इसलिए हम वसीयत नहीं सकते।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रलेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया यह तो सिर्फ बहाना है। इस हवाला से मैंने एक ख़ुत्बा भी दिया था अगर आप वसीयत करें तो अल्लाह तआला आपके तक़्वा का मयार बढ़ाने की तौफ़ीक़ भी प्रदान फ़र्मा देता है। ऐसे लोगों को ख़ुतबों के सर्कुलर भिजवाया करें। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रलेहिल अज़ीज़ फ़रमाया:जर्मनी बहुत बड़ी जमाअत है और उन्होंने यह टार्गेट हासिल कर लिया है। इसी तरह यू.के भी अपने टार्गेट के क़रीब पहुंच गई है

इसके बाद ऐडीशनल सैक्रेटरी माल ने अर्ज़ किया कि मैं फिनांस टीम के साथ काम करता हूँ जिसके10 मैंबर हैं और हर मैंबर के सपुर्द दस के क़रीब जमाअतें हैं

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रलेहिल अज़ीज़ ने सैक्रेटरी माल से मुख़ातब होते हुए फ़रमाया कि जो लोग अपनी असल आय पर चंदा अदा नहीं करते उन के लिए कोई प्लान बनाएँ। अगर वह किसी वजह से असल आय पर चंदा अदा नहीं कर सकते तो वे बाक़ायदा लिख कर छूट ले लें। इस हवाला से मेरे बयान से भी मदद लें। कुछ मुबल्लग़ीन ने मुझे बताया है कि जब हम लोगों को या कुछ ओहदेदारान को चंदा की अदायगी के हवाला से कहते हैं तो उनका जवाब होताहै कि आपके पास माली मामलों में दख़ल अंदाज़ी करने का इख़तियार नहीं है। हालाँकि यह तो माली मामलों में दख़ल अंदाज़ी नहीं है , वे तो सिर्फ चन्दा की वसूली में मदद कर रहे होते हैं।

सेक्रेटरी माल ने निवेदन किया कि हमने कुछ बुज़ुर्गों के ज़िम्मा कुछ जमाअतें लगाई हैं ताकि वे वहां जाकर लोगों से सम्पर्क करें और इस बारे में काम करें। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: लेकिन इस बात की यक़ीन दहानी कर लिया करें कि जिनको जमाअतों में भिजवाना है उन के अपने चन्दे असल आय के अनुसार हैं।

*इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने नेशनल सेक्रेटरी तालीमुल क़ुरआन से मुख़ातब होते हुए फ़रमाया कि मुझे अमरीका से कुछ लोगों के विशेष रूप से औरतों के पत्र मिलते रहे हैं कि जब से हमने पैसे देकर अपने बच्चों की कक्षाए बंद करवाई हैं इस वक़्त से हमें मुश्किलें का सामना है। लेकिन अब तो रब्वा में नज़ारत शिक्षा की तरफ़ से इन कक्षाओं का आरम्भ किया गया है। उनकी क्लासों में छात्रों का काफ़ी इज़ाफ़ा हुआ है और छात्रों की संख्या अब 2000 तक हो गई है।

सेक्रेटरी तालीमुल क़ुरआन ने निवेदन किया कि रब्वा वाली क्लास में भी 107 छात्र रजिस्टर्ड हुए हैं लेकिन हमने भी ऑनलाइन कक्षाओं का आरम्भ किया है जिसमें 1240 छात्र पढ़ रहे हैं। पढ़ाने के लिए 146 ख़वातीन टीचर्ज़ और 11 मर्द टीचर हैं। ये सारे टीचर रब्वा से approve करवाए गए हैं।

*इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के पूछने पर नेशनल सेक्रेटरी तहरीक जदीद ने निवेदन किया कि हमने पिछले साल अपना तहरीक जदीद में शामिल होने वालों की संख्या और बजट दोनों का टार्गेट पूर्ण कर लिया है। पिछले साल तहरीक जदीद में हिस्सा लेने वालों की संख्या 13 हज़ार थी जबकि इस साल यह संख्या 14400 हो गई है। हमारी वसूली 2.22 मिलियन डॉलरज़ थी। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि लगभग 2 लाख डॉलरज़ तो पाकिस्तान में सिर्फ लजना इमाउल्लाह रब्वा ने अदा किया है।

*इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ के पूछने पर नेशनल सेक्रेटरी वक़्फ़ जदीद ने निवेदन किया कि वक़्फ़ जदीद में शामिल होने वालों की संख्या के लिहाज़ से पिछले साल हमारा टार्गेट 13000 का था लेकिन 12 हज़ार 74 शामिल हुए थे। टार्गेट से थोड़ा पीछे रह गए थे। लेकिन इस साल इंशा अल्लाह हम 13 हज़ार का टार्गेट प्राप्त कर लेंगे

हुज़ूर अनवर के पूछने पर एक आमिला के मैंबर ने निवेदन किया कि पिछले तीन सालों में नौ मुबाईन की संख्या 385 है लेकिन 210को AIMSकार्ड ईशू हुए हैं। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि इस का अर्थ है कि 210 नौ मुबाईन mainstream का हिस्सा बने हैं।

हुज़ूर अनवर के पूछने पर ऐडीशनल सेक्रेटरी तरबियत नौ मुबाईन ने निवेदन किया कि नौ मुबाईन का सम्बन्ध विभिन्न अक़्वाम से है। अफ़्रीकन और अफ़्रीकन अमरीकन की संख्या 83, अमरीकन की संख्या 2,Caucasian की संख्या 55, एशीयन 32, हिसपानवी 48, बंगला देशी 11 हैं।इसके अतिरिक्त चार Caribbean और पेसेफिक आईलैंड से 10, मिडल ईस्ट से 4 और 67 पाकिस्तानी हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने इरशाद फ़रमाया: इस बात की यक़ीन दहानी करें कि हर नई बैअत करने वाले अहमदी को सूरत फ़ातिहा और उसका अनुवाद आता हो।

*इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ के पूछने पर नेशनल सेक्रेटरी वक़्फ़ नौ ने निवेदन किया कि वाक़फ़ीन नौ की कुल संख्या 1385 है। इस में से 774 लड़के और 611 लड़कीयां हैं। उम्र के लिहाज़ से 15 से

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

18 साल की उम्र वाले वाक़फ़ीन 432 और 18 साल से ऊपर वाक़फ़ीन में 345 हैं।

हुज़ूर अनवर के पूछने पर सेक्रेटरी वक़्फ़ नौ ने निवेदन किया कि 327 वाक़फ़ीन ने तनवीन वक़्फ़ किया है। उनमें से 4 वाक़फ़ीन जमाअत के विभिन्न विभागों में काम कर रहे हैं जबकि 7 वाक़फ़ीन बतौर मुबल्लिग़ ख़िदमतें कर रहे हैं।

*इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने सेक्रेटरी ज़राअत से पूछा कि आपका खेती के विभाग के साथ कोई सम्बन्ध भी है? इस पर सेक्रेटरी खेती ने निवेदन किया कि मैं कोलंबस जमाअत में तीन साल तक सेक्रेटरी खेती रहा हूँ। इस के अतिरिक्त मेरा खेती के पेशा के साथ कोई ख़ास सम्बन्ध नहीं है। लेकिन मैंने कुछ चीज़ों के बारे में सोचा है कि वे की जा सकती हैं। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया:अगर आपके ज़हन में प्लान है तो उसे लिख कर मुझे भिजवाएं। प्लान सीधा सादा होना चाहिए।

*इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ के पूछने पर मुहासिब ने रिपोर्ट पेश करते हुए कहा कि मैं सारी statements तय्यार कर के सेक्रेटरी माल को दे देता हूँ।

*इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ के पूछने पर अमीन ने निवेदन किया कि मैं बैंक के साथ होने वाली transactions को देखता हूँ कि खर्चों की रिपोर्टस के अनुसार ही रक़म निकलवाई जा रही है।

*इस के बाद हुज़ूर अनवर के पूछने पर इंटरनल आडीटर ने बताया कि वे तीन महीने में एक बार ऑडिट करते हैं। इस में खर्चों और रसीदें इत्यादि चैक करते हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ के पूछने पर फरमाया कि अगर कोई विभाग अपने मुजव्वज़ा बजट से ज़्यादा ख़र्च करे तो उस के लिए क्या करते हैं? इंटरनल आडीटर ने निवेदन किया कि मैं फिर हालात के अनुसार देखता हूँ कि अगर वास्तव में ज़रूरत के अनुसार ख़र्च हुआ है तो ठीक है।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: आप अधिक ख़र्च करने की इजाज़त नहीं दे सकते। अगर कोई विभाग अपनी limit से ज़्यादा ख़र्च करे तो आपको चाहिए कि अमीर साहिब को सूचित करें ताकि वह यह मामला आमिला में रखें और फिर आमिला इस पर अपनी सिफ़ारिश करके मर्कज़ भेजे और फिर मर्कज़ से आन्तिम आज्ञा आने के बाद यह खर्चे हों। आपको चाहिए कि बहैसीयत इंटरनल आडीटर खर्चों की सख़्त जांच पड़ताल क्या करें। अगर आप देखते हैं कि कोई चीज़ अपने निर्धारित बजट से ज़्यादा ली गई है या कोई विभाग निर्धारित बजट से ज़्यादा ख़र्च कर रहा है तो आप इसको रोक दें। आपके पास यह अधिकार नहीं है कि आप किसी विभाग को इस के निर्धारित बजट से अधिक ख़र्च करने की इजाज़त दें। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने फ़रमाया: इंटरनल आडीटर के कर्तव्य बहुत वसीअ और अहम भी हैं। आप का फ़र्ज़ है कि आप सारे खर्चों को देखें कि आया वे मंज़ूर हुए बजट के अनुसार हो रहे हैं। अगर मंज़ूर हुए बजट के अनुसार नहीं हो रहे तो फ़ौरी तौर पर अमीर साहिब को सूचना करें।

*इस के बाद नायब अमीर डाक्टर हमीदुर रहमान साहिब ने निवेदन किया कि हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ 2013 ई में लास ऐंजलिस तशरीफ़ लाए थे और हुज़ूर अनवर ने हिस्पानवी लोगों में तब्लीग़ करने की हिदायत फ़रमाई थी। अत: इसके बाद हमने वहां काफ़ी काम किया है और 31 बैअतें हुई हैं। अब वहां हमने चर्च की बिल्डिंग भी ख़रीदी है जिसके साथ 26 गाड़ियों के पार्क करने की भी जगह है। हुज़ूर अनवर की सेवा में इस प्राजैक्ट में कामयाबी के लिए दुआ की दरख़ास्त है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ के पूछने पर महोदय ने निवेदन किया कि 3800 वर्ग फ़ुट छत वाला हिस्सा है। इसके दो हिस्से हैं , एक में पुराना चर्च है जो कि 1800 वर्ग फुट का है जबकि दूसरा हिस्सा नया बना है जिसमें स्कूल था। इस पर साढ़े नौ लाख डॉलरज़ के खर्चों आए हैं जिसमें से कुछ हमने मर्कज़ से बतौर क़र्ज़ लिए हैं और बाक़ी ख़ुद अदा किए हैं। इंशाअल्लाह मर्कज़ को भी उन की रक़म जल्द वापस कर देंगे।

हुज़ूर अनवर के पूछने पर नायब अमीर साहिब ने निवेदन किया कि इमारत की एक ही मंज़िल है लेकिन हम दूसरी मंज़िल बुनियाद करने की इजाज़त के लिए कार्रवाई कर रहे हैं। इजाज़त मिलने की सूरत में नए हिस्सा पर दूसरी मंज़िल बुनियाद की जा सकती है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने हिदायत फ़रमाई कि आपसे पहले पूछ लें कि नीचे वाली मंज़िल upper floor का वज़न उठालेगी।

नेशनल मजलिस आमला की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ के साथ यह मीटिंग 9 बजे तक जारी रही।

आमीन के प्रोग्राम की तक़रीब

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ मस्जिद बैयतुर्रहमान तशरीफ़ ले आए जहां प्रोग्राम के अनुसार आमीन के प्रोग्राम की तक़रीब का आयोजन हुआ। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने निम्नलिखित 28 बच्चों और बच्चियों से क़ुरआन करीम की एक-एक आयत सुनी और आख़िर पर दुआ करवाई।

प्रिय अनोश रिज़वान (जमाअत सैंटर्ल वर्जीनिया, प्रिय मीरअब सईद(जमाअत सैंटर्ल वर्जीनिया), प्रिया सोहा अहमद (जमाअत सैंटर्ल वर्जीनिया), प्रिया ईमान फ़िर्दोस अहमद(जमाअत सैंटर्ल वर्जीनिया), प्रिय शायान ख़ान (जमाअत सैंटर्ल वर्जीनिया), प्रिय ज़ैद अहमद ख़ान (जमाअत LA East),प्रिय अयान विक़ास (जमाअत PA Lehigh Valley), प्रिय अयान एन चौधरी(जमाअत PA Lehigh Valley), प्रिया आसमा अतहर (जमाअत लॉंग आईलैंड , न्यूयार्क), प्रिया नेना एलीज़ा अहमद(जमाअत मिलवाकी), प्रिय अनोश अहमद(जमाअत न्यूयार्क), प्रिय औसाफ़ तफ़हीम अहमद (जमाअत नॉर्थ जर्सी),प्रिय अदील अहमद(जमाअत नॉर्थ वर्जीनिया),प्रिया इनाम अहमद(जमाअत नॉर्थ वर्जीनिया), प्रिय फ़ारान सामी जदरान (जमाअत नॉर्थ वर्जीनिया), प्रिया माहा ख़ान (जमाअत नॉर्थ वर्जीनिया), प्रिय रिहान वाईट (जमाअत नॉर्थ वर्जीनिया), प्रिय साद राजा (जमाअत नॉर्थ वर्जीनिया),प्रिया केसरा अहमद(जमाअत NY Queens),Seraphina Ada Hussein Ahmed(जमाअत सैटल WA), प्रिय राफ़ील भट्टी(जमाअत सिलवर स्प्रिंग MD), प्रिया नूरिया अहमद (जमाअत वाशिंगटन डी सी), प्रिय अबदुल्लाह रज़ा सुलतान (जमाअत हारिस बर्ग /यार्क), प्रिया ज़ोया आलीया महमूद (जमाअत बुरा नकस , न्यूयार्क), प्रिय आशिर हमीद (कैनेडा), प्रिय प्रदान उल-करीम जोईआ(कैनेडा), प्रिया बासमा बुशरा इबराहीम (कैनेडा), प्रिय फ़ैज़ान ख़ान (कैनेडा)

आमीन के प्रोग्राम की तक़रीब के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने नमाज़ मग़रिब तथा इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह तशरीफ़ ले गए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ के दौरा अमरीका तथा ग्वेटामाला की कवरेज दुनिया भर में व्यापक स्तर पर हुई और इलैक्ट्रॉनिक, प्रिन्ट तथा सोशल मीडिया के द्वारा कई मिलियन लोगों तक पैग़ाम पहुंचा। इस कवरेज का ख़ुलासा नीचे दर्ज है।

*दौरा के दौरान चार स्थानो पर प्रैस कान्फ्रैंसज़ का आयोजन हुआ।

(1)फ़िलाडेल्फ़िया:मस्जिद बैतुल आफ़ियत के उद्घाटन के अवसर पर

(2)बाल्टीमोर:मस्जिद बैतुलसमद के उद्घाटन के अवसर पर

(3)ग्वेटामाला:नासिर हस्पताल के उद्घाटन के अवसर पर

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उस के रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

(4)साउथ वर्जीनिया:मस्जिद मसरूर के उद्घाटन के अवसर पर।

* रिव्यू आफ़ रीलीजनज़ के द्वारा भी व्यापक स्तर पर मीडिया कवरेज हुई।

*हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने नासिर हस्पताल के उद्घाटन के अवसर पर रिव्यू आफ़ रीलीजनज़ के स्पेनिश ऐडीशन और स्पेनिश वेबसाइट का भी आरम्भ फ़रमाया ।

*इस बारे में से अंग्रेज़ी के साथ साथ स्पेनिश सोशल मीडिया पर भी पोस्ट डाली गईं जिनमें फेसबुक, ट्वीटर, इंस्टाग्राम, वेबसाइट आर्टीकलज़ और यू-ट्यूब इत्यादि शामिल हैं। इन पोस्ट्स को 6 लाख 37 हज़ार से अधिक लोगों ने देखा।

*दौरा के बारे में से रिव्यू आफ़ रीलीजनज़ इंग्लिश टीम ने दो दो, तीन तीन मिनट की शॉर्ट डाकूमैंटरीज़ बनाकर अपलोड कीं जिन्हें 8 लाख से अधिक लोगों ने देखा।

*इसके अतिरिक्त हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ के ख़त्बों के बारे में भी कवरेज की गई।

*एक अंदाज़ा के अनुसार अंग्रेज़ी तथा स्पेनिश सोशल मीडिया पर जो Posts डाली गईं उन्हें 1.86 मिलियन से अधिक लोगों ने देखा।

*नासिर हस्पताल ग्वेटामाला के उद्घाटन के बारे में से ग्वेटामाला में भी व्यापक स्तर पर मीडिया कवरेज हुई।

*ग्वेटामाला की नेशनल अख़बार (Prensa Libre) जिसका प्रकाशन दैनिक एक लाख तीस हज़ार और चार मिलियन से अधिक पढ़ने वाले हैं, ने अपनी 24 अक्तूबर 2018 ई की इशाअत में पहले पृष्ठ पर नासिर हस्पताल की बड़ी तस्वीर प्रकाशित की और उद्घाटन के बारे में से रिपोर्ट प्रकाशित की।

*इसी अख़बार (Prensa Libre) ने कालम नवीस(Samuel Reyes Gomez) का नासिर हस्पताल के बारे में एक विस्तारपूर्वक आर्टीकल प्रकाशित किया।

*नेशनल अख़बार (El Periodico) में भी रिपोर्ट प्रकाशित हुई।

*नेशनल टीवी Guatevision ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ और नासिर हस्पताल के परिचय पर आधारित रिपोर्ट प्रसारित की।

*नेशनल रेडीयो चैनल(Radios EmisorasUnidas) ने भी उद्घाटन के बारे में से ख़बर प्रकाशित की।

*इस लिहाज़ से एक अंदाज़ा के अनुसार लातीनी अमरीका के विभिन्न देशों के प्रिंट मीडिया, विभिन्न अख़बारों तथा टेलीविज़न चैनलों के द्वारा लगभग 32 मिलियन लोगों तक नासिर हस्पताल के उद्घाटन की ख़बर पहुंची।

*इसके अतिरिक्त सोशल मीडिया ट्वीटर , इंस्टाग्राम और यू-टयूब के द्वारा 23 लाख लोगों तक नासिर हस्पताल के उद्घाटन की ख़बर पहुंची ।

ऐम .टी .ए सोशल मीडिया टीम की तरफ से भी दौरा ग्वेटामाला और अमरीका की कवरेज की गई। ऐम .टी. ए सोशल मीडिया की रिपोर्ट के अनुसार हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ के इस बरकतों वाले दौरा की विभिन्न प्लेटफ़ार्मज़ के द्वारा से कल 18 लाख 31 हज़ार 910 लोगों तक पैग़ाम पहुंचा।

*इस कवरेज में 4 लाख 95 हज़ार से अधिक नए देखने वाले शामिल हैं।

*मीडिया टीम यू ऐस ए की तरफ से भी दौरा की कवरेज के बारे में से कोशिशें की गईं। अमरीका में टीवी के द्वारा से कल 28 लाख 69 हज़ार से अधिक लोगों तक इस्लाम का पैग़ाम पहुंचा है।

*रेडियो प्रोग्रामों के द्वारा कल 53 लाख 98 हज़ार से अधिक लोगों तक पैग़ाम पहुंचा।

*डिजीटल फ़ोर्मज़, वेबसाईटस और सोशल मीडिया इत्यादि के द्वारा से लगभग 20 लाख लोगों तक पैग़ाम पहुंचा।

*विभिन्न अख़बारों रसालों में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ के दौरा के बारे में से कल 46आर्टीकलज़ प्रकाशित हुए।

*उनमें प्रसिद्ध अख़बार Baltimore Sun, Philadelphia Inquirer, Religion News Service, Houston Chronicle शामिल हैं।

*अत: इन माध्यमों की मदद से अमरीका में कुल दस मिलियन से अधिक लोगों तक पैग़ाम पहुंचा।

*अल्इस्लाम वेबसाइट की तरफ से भी दौरा की कवरेज की गई। अल्इस्लाम वेबसाइट के द्वारा 10 लाख से अधिक लोगों तक पैग़ाम पहुंचा।

*फेसबुक के द्वारा कल 16 लाख लोगों तक पैग़ाम पहुंचा।

*विभिन्न वीडियो के द्वारा कल 4 लाख 50 हज़ार लोगों तक पैग़ाम पहुंचा।

*ट्वीटर के द्वारा कुल 7 लाख 38 हज़ार लोगों तक पैग़ाम पहुंचा।

*इस तरह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ के दौरा अमरीका तथा ग्वेटामाला की अल्इस्लाम वेबसाइट और सम्बन्ध सोशल मीडिया के द्वारा से लगभग चालीस लाख लोगों तक पैग़ाम पहुंचा है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ के दौरा अमरीका की एम टी ए अफ़्रीक़ा के अन्तर्गत अफ़्रीक़ा में भी टीवी, रेडीयो और अन्य इलैक्ट्रॉनिक तथा प्रिंट मीडिया के द्वारा व्यापक स्तर पर कवरेज हुई।

*इस में घाना नेशनल टीवी, सेरालियून नेशनल टीवी, AYV नेशनल टीवी सेरालियून, फ़्री टाउन टेलीविज़न सेरालियून, गेम्बिया नेशनल टेलीविज़न, नेशनल टीवी यवगनडा BBS , MITV नाईजीरिया, नेशनल टीवी साइन पुलिस घाना, घाना नेशनल रेडियो, घाना न्यूज़ एजैंसी ऑनलाइन, रवांडा नेशनल.टीवी BTN, बोर कीना फासो TV3, Independent News paper नाईजर या इत्यादि शामिल हैं।

*उनके द्वारा लगभग दस मिलियन से अधिक लोगों तक प्रसारण पहुंचें।

5 नवंबर 2018 ई (दिनांक सोमवार)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने सुबह पाँच बजकर चालीस मिनट पर मस्जिद बैयतुर्रहमान में तशरीफ़ ला कर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने दफ़्तरी डाक, पत्र और रिपोर्टस मुलाहिज़ा फ़रमाएं और हिदायतों से नवाज़ा। हुज़ूर अनवर विभिन्न दफ़्तरी मामलों को पूरा करने में व्यस्त रहे।

प्रोग्राम के अनुसार डेढ़ बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ मस्जिद बैयतुर्रहमान के एक हाल में तशरीफ़ लाए जहां विभिन्न विभागों में की ग्रुप तस्वीरों का प्रोग्राम तर्तीब दिया गया था। निम्नलिखित 28 विभागों ने बारी बारी ग्रुपस की अवस्था में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया।

* ग्रुप सैक्योरिटी हिफ़ाज़त ख़ास। * मेम्बरों नेशनल मजलिस आमला जमाअत यू एस ए। * मुबल्लग़ीन किराम यू ऐस ए, * काम करने वाले विभाग ज़याफ़त जनरल। *काम करने वाले विभाग ज़याफ़त। *मुलाक़ात विभाग। * इंतिज़ामीया जिसने दौरा के प्रोग्राम आर्गेनाईज़ किए। * ख़िदमत खलक विभाग * विभाग तालीमुल क़ुरआन, वक़्फ़ आरज़ी विभाग (आमीन आयोजन आर्गेनाईज़ कीं) * रिहायश विभागष * विभाग पार्किंग तथा ट्रैफ़िक कंट्रोल। * स्टाफ़ विभाग, इंतिज़ामीया मस्जिद बैयतुर्रहमान। * समई बस्री विभाग (लोकल)। * मजलिस आमला ख़ुद्दामुल अहमिदया यू एस ए * क़ज़ा विभाग। * उमूरे ख़ारिजा विभाग। * ग्रुप अतफ़ालुल अहमदिया (जिसने वक़्फ़ आरज़ी में हिस्सा लिया) हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने दया करते हुए इन अतफ़ाल को क़लम प्रदान फ़रमाए। * मीडिया टीम। * उमूरे आम्मा विभाग। * टीचर तथा छात्र जामिआ अहमदिया कैनेडा। * मुबल्लग़ीन किराम जमाअत अहमदिया कैनेडा। * स्टाफ़ MTA टैली पोर्ट यू एस ए। * विभाग क़ाफ़िला ट्रांसपोर्ट। *विभाग फ़ोटोग्राफ़र्ज़ * जायदाद विभाग। * सैक्योरिटी विभाग

(ख़ुद्दाम जो विभिन्न बाहरी पोस्टों पर तैयनात थे)

* MTA इंटरनेशनल लंदन (मर्कज़ी टीम MTA जिसने इस दौरा की पूर्ण कवरेज की)

तस्वीरों के इस प्रोग्राम के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद बैयतुर्रहमान में तशरीफ़ ला कर नमाज़ ज़ुहर तथा असर जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 4 Thursday 12 December 2019 Issue No. 50

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

पिछले पहर भी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ विभिन्न कामों को पूरा करने में व्यस्त रहे। प्रोग्राम के अनुसार छः बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद बैयतुर्रहमान में तशरीफ़ ला कर नमाज़ मग़रिब तथा इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ अपने रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ के दौरा अमरीका का आज समापन हो रहा था। आज शाम अमरीका से वापस लंदन बर्तानिया के लिए रवानगी थी। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ को विदा कहने के लिए दोपहर से ही जमाअत के लोगों विभिन्न जमाअतों से मस्जिद बैयतुर्रहमान जमा होने शुरू हो गए थे।

हुज़ूर अनवर की अमरीका से रवानगी

सात बजकर चालीस मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह से बाहर तशरीफ़ लाए हुज़ूर अनवर के चेहरा मुबारक पर नज़र पड़ते ही जमाअत के लोगों ने बड़े जोश और ख़ुशी के साथ नारे बुलंद किए। सभी के हाथ बुलंद थे। औरतें अपने हाथ हिलाते हुए दर्शन के सौभाग्य से फ़ैज़याब हो रही थीं। बच्चियां ग्रुपस की सूरत में विदाई दुआ की नज़्में पढ़ रही थीं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ दया करते हुए लोगों के क़रीब तशरीफ़ ले गए और कुछ वक़्त के लिए लोगों में रौनक अफ़रोज़ रहे। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई। इस दौरान बड़े रिक़्क़त आमेज़ मुनाज़िर देखने को मिले। लोगों तथा औरतों यहां तक कि बच्चों की आँखों में भी आँसू नज़र आ रहे थे। हर छोटा बड़ा दुखी था। जब हुज़ूर अनवर की गाड़ी मस्जिद बैतुल रहमान के बाहरी सेहन से रवाना हुई तो लोगों के हाथ फ़िज़ा में बुलंद थे और हर तरफ़ से अस्सलामो अलैकुम, फ़ी अमानिल्लाह और ख़ुदा-हाफ़िज़ की आवाज़ें बुलंद हो रही थीं।

लगभग आठ बजकर चालीस मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ की एयरपोर्ट पर लाए। हुज़ूर अनवर की एयरपोर्ट पर आने से पहले ही सामान की बुकिंग और बोर्डिंग पास को लेने की कार्रवाई पूर्ण हो चुकी थी। जैसे ही हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ गाड़ी से बाहर तशरीफ़ लाए एयरपोर्ट के प्रोटोकोल ऑफीसर ने हुज़ूर अनवर को स्वागत कहा और हुज़ूर अनवर को अपने साथ एयरपोर्ट के अंदर ले गए।

इमीग्रेशन के लिए एक अलग जगह निर्धारित करके विशेष प्रबंध किया गया था। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ एक स्पेशल लाओनज में तशरीफ़ ले गए। दस बजकर पंद्रह मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ जहाज़ पर सवार हुए।

आदरणीय साहिबज़ादा मिर्ज़ा मग़फ़ूर अहमद साहिब अमीर जमाअत यू एस ए, मुहतरमा साहबज़ादी अमतुल मुसव्विर साहिबा पत्नी अमीर साहिब अमरीका, आदरणीय डाक्टर नसीम रहमतुल्लाह साहिब नायब अमीर जमाअत अमरीका, आदरणीय मलिक वसीम अहमद साहिब नायब अमीर जमाअत अमरीका, आदरणीय मुनइम नईम साहिब चेयरमैन ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट यू एस ए हुज़ूर अनवर को विदा कहने के लिए हुज़ूर अनवर के साथ एयरपोर्ट के अंदर तक आए थे। इन सभी लोगों ने हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात का अवसर प्राप्त किया। साहबज़ादी अमतुल मुसव्विर साहिबा ने हज़रत बेगम साहिबा को विदा कहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर जहाज़ के अंदर तशरीफ़ ले गए।

लन्दन वुरूद मसऊद

ब्रिटिश एयरवेज़ की परवाज़ BA292 दस बज कर चालीस मिनट पर वाशिंगटन के Dullas इंटरनेशनल एयरपोर्ट से हीथ्रो एयरपोर्ट लंदन के लिए रवाना हुई। लगभग पौने सात घंटे की निरन्तर उड़ने के बाद बर्तानिया के स्थानीय वक़्त के अनुसार 6 नवम्बर दिनांक मंगल की सुबह दस बज कर पच्चीस मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ का जहाज़ हीथ्रो एयरपोर्ट लंदन पर उतरा। जहाज़ के दरवाज़ा पर एयरपोर्ट के एक प्रोटोकोल ऑफीसर ने हुज़ूर अनवर को स्वागत कहा।

इस के बाद हुज़ूर अनवर विशेष प्रबंध के अन्तर्गत एक स्पेशल लाओनज में तशरीफ़ ले आए। इसी लाओनज में आदरणीय रफ़ीक़ अहमद हयात साहिब अमीर जमाअत यूके, आदरणीय मुबारक अहमद ज़फ़र साहिब ऐडीशनल वकीलुल माल लंदन और आदरणीय इमरान ज़फ़र साहिब मुहतमिम उमूमी मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमिदया यू.के ने हुज़ूर अनवर को स्वागत कहा। इसी लाओनज में इमीग्रेशन ऑफीसर ने आकर पासपोर्ट देखे।

ग्यारह बजकर पैंतीस मिनट पर एयरपोर्ट से मस्जिद फ़ज़ल लंदन के लिए रवानगी हुई। लगभग साढ़े बारह बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ की मस्जिद फ़ज़ल लंदन लाए। जहां जमाअत के लोगों मर्दों तथा ख़वातीन और बच्चों ने बड़ी संख्या में अपने प्यारे आक़ा का स्वागत किया और हुज़ूर अनवर को स्वागत कहा। मस्जिद फ़ज़ल के बाहरी सेहन को झंडियों से सजाया गया था। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने अपना हाथ बुलंद करके सबको अस्सलामो अलैकुम कहा और अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ के अमरीका और ग्वेटामाला के इस सफ़र में हज़रत बेगम साहिबा मदिज़ल्लहा आली के अतिरिक्त जिन लोगों को हुज़ूर अनवर के क़ाफ़िला में शमूलीयत का सौभाग्य प्राप्त किया उनके नाम नीचे लिखे हैं:

आदरणीय मुनीर अहमद जावेद साहिब (प्राईवेट सेक्रेटरी)

आदरणीय आबिद वहीद ख़ान साहिब (इंचार्ज प्रैस ऐंड मीडिया ऑफ़िस लंदन)

आदरणीय सय्यद मुहम्मद अहमद नासिर साहिब (नायब अफ़्सर हिफ़ाज़त ख़ास लंदन)

आदरणीय नासिर अहमद सईद साहिब (हिफ़ाज़त विभाग),आदरणीय महमूद अहमद ख़ान साहिब (हिफ़ाज़त विभाग),आदरणीय सख़ावत अली बाजवा साहिब (हिफ़ाज़त विभाग),आदरणीय मिर्ज़ा लईक अहमद साहिब (हिफ़ाज़त विभाग),ख़ाकसार अब्दुल माजिद ताहिर (ऐडीशनल वकीलत्तबशीर लंदन)

*अमरीका से डाक्टर आदरणीय तनवीर अहमद साहिब इस सारे सफ़र के दौरान बतौर डयूटी क़ाफ़िला के साथ रहे। अमीर साहिब अमरीका ने उन्हें सफ़र के आरम्भ से दो दिन पहले ही लंदन भिजवा दिया था जहां से यह क़ाफ़िला के साथ ही रवाना हुए और फिर वापस लंदन पहुंचने तक क़ाफ़िला के साथ रहे।

* आदरणीय डाक्टर हामिदुल्लाह ख़ान साहिब (यूके) को भी अमरीका में स्थापना के दौरान क़ाफ़िला में शामिल होने का सौभाग्य नसीब हुआ।

* एम. टी. ए इंटरनेशनल यूके के निम्नलिखित मेम्बरों ने अमरीका और ग्वेटामाला से कुछ प्रोग्रामों की live ट्रांसमिशन और विभिन्न प्रोग्रामों की कवरेज और रिकार्डिंग के लिए इस दौरा में शामिल होने का सौभाग्य पाया। आदरणीय मुनीर ऊदा साहिब,आदरणीय तौक़ीर अहमद मिर्ज़ा साहिब, आदरणीय ग़ालिब ख़ान साहब, आदरणीय अदनान ज़ाहिद साहिब, आदरणीय हामिदुल्लाह नासिर साहिब, आदरणीय सफ़ीरुद्दीन क़मर साहिब, आदरणीय अली अहमद साहिब (सोशल मीडिया)

* MTA अफ़्रीक़ा के अन्तर्गत अफ़्रीकन देशों में इस दौरा की कवरेज के लिए उम्र सफ़ीर साहिब, इंचार्ज MTA अफ़्रीक़ा ने शमूलीयत का सौभाग्य पाया।

*रिव्यू आफ़ रीलीजनज़ के अन्तर्गत इस दौरा की कवरेज के लिए आदरणीय आमिर सफ़ीर साहिब ऐडीटर रिसाला रिव्यू आफ़ रीलीजनज़ ने शमूलीयत का सौभाग्य पाया।

* मर्कज़ी विभाग मख़ज़न तस्वीरों से आदरणीय उमेर अलीम साहिब इंचार्ज विभाग और ग़िद्दीर अहमद साहिब ने शमूलीयत का सौभाग्य पाया।

अल्लाह तआला इन सब लोगों के लिए यह सौभाग्य मुबारक फ़रमाए।

☆ ☆ ☆
☆ ☆
☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad